भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 05 | उदयपुर शुक्रवार 15 मार्च 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली पर जैसलमेर में रम्मतों के ठाठ

– नंदकिशोर शर्मा –

पश्चिम राजस्थान के विशाल भू-भाग पर स्थित लगभग 38454 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला पाकिस्तान की उत्तरी-पश्चिमी सीमा से लगा जैसलमेर इतिहास, कला और संस्कृति के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहां की शिल्पकला, चित्रकला, मन्दिर-देवस्थान, राजप्रासाद, पटुवों की हवेलियां, सरोवर, झूलण-झरोखे एवं ताड़पत्रीय पुस्तकों का संग्रह भारतीय कला व साहित्य के उच्चतम नमूनों के रूप में विख्यात है। इस धरती पर अनेकों कवियों, कलाकारों, लेखकों एवं विद्वानों ने जन्म लिया तथा अपनी मनोभावनाओं से कला के विविध रूपों को संजोया-संवारा है।

स्वतंत्रता से पूर्व जैसलमेर एक अलग राज्य था। यहां पर यादव भाटी राजपूत राज्य करते थे। सोलहवीं शताब्दी में महारावल हरराजजी के राज्यकाल में श्री जवाहरसिंहजी के राज्यकाल तक जैसलमेर ने लगभग 300 वर्ष तक हर क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की।

जैसलमेर का क्षेत्र जितना शुष्क है उतना ही यहां का ह्रदय सरस है। यहां के लोकगीत, लोककथाएं व मारवाड़ी ख्याल अनेक राग-रागिनियों से भरे पड़े हैं जो लोकसाहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। ये ख्याल इधर रम्मत अथवा तमाशा नाम से प्रचलित हैं।

प्रचीनकाल में जब मनोरंजन के साधनों का अभाव था तब लोग रात-रात भर भजन, रामलीला, रासलीला, कृष्णलीला, हरिण्यकश्यप, भक्त प्रहलाद आदि के खेल खेला करते थे जिन्हें लीलाओं के नाम सम्बोधित किया जाता था। इन्हीं लीलाओं ने आगे जाकर रम्मत या तमाशों का रूप धारण किया।

प्रारम्भ में ये रम्मतें राजा-महाराजाओं के मनोरंजन हेतु खेली जाने लगीं जिनका विषय केवल श्रृंगार था। इसमें नारी के रूप-सौन्दर्य की प्रशंसा, उसको प्राप्त करने हेतु प्रतिस्पर्द्धा एवं वासना-प्रधान प्रसंगों का बाहुल्य रहता था।

इसी जैसलमेर में इस समय की मुख्य रम्मतें थीं- मूमल-महेन्द्रा, फूलजी-फूलमती, डूंगजी-जवारजी, सात मासियां, तीन भाभियां, शैतान सुन्दरी, छेला तम्बोलन, शहजादा सुलतान तथा आभा बीजली। इनके मुख्य रचनाकारों में सेवग, मग, मधा सेवग खेता, भोजक विरधा एवं लाभुजी आदि प्रमुख थे। आज इन रचनाकारों की रचनाएं तो उपलब्ध नहीं हैं लेकिन इनकी रचनाओं के बोल यहां के लोगों के कण्ठों पर अवश्य सुने जा सकते हैं।

ये रचनाएं 18वीं सदी की हैं। इस समय कई जैन व चारण कवि भी हुए जिन्होंने इन्हीं ख्यालों की लोकधुनों पर कई गीत तथा भजन रचे जिसमें श्री रंगरेलाजी, मायब दानजी, मैयाजी बीठु, जिनराज सूरि, जिन समुद्र सूरि, जिन लाभ सूरि आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भीमशाहजी, चौथमलजी, बनजी शाह (वनेचन्द), रतनलालजी आदि रचनाकार हुए जिनकी लिखी रत्नकंवर, सुध-बुध सालंगा, अमरसिंह, भक्त पूरण, रूक्मणी मंगल, गोपीचन्द मुख्य हैं। इसके बाद उत्तरार्द्ध में वीर पूजा, धार्मिक, नैतिक व सामाजिक आदि विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। इस समय की लिखी रम्मतों में राजा जोग भतृहरि, नेना खसम, सती सावित्री, राजा हरिश्चन्द्र आदि अधिक चर्चित रहीं। सुप्रसिद्ध तेज कवि, मोतीलाल सुगनलाल तथा रतनलाल इसी समय के प्रमुख लेखक हैं।

ये रचनाकार स्वयं अच्छे अभिनेता-कलाकार थे। अत: जहां भी राजस्थान के प्रवासी रहते थे वहां पर जाकर ये लोग प्रदर्शन करते थे। जैसलमेर के इन कलाकारों द्वारा सिंध, महाराष्ट्र, गुजरात आदि स्थानों पर कई बार खेल खेले गये। राजस्थान में जैसलमेर वाले बीकानेर, फलोदी, जोधपुर, पोकरन तथा बाड़मेर में जाकर अपने खेल खेला करते थे। सिंध में इनके मुख्य स्थान थे- रोहड़ी, शख्खर व जेकमाबाद जहां सती सावित्री नामक प्रथम ख्याल खेला गया।

यहां की रम्मतें बसन्त ऋतु के प्रारम्भ में होली के आसपास से शुरू होती हैं और वैशाख मास की अक्षय तृतीया तक खेली जाती हैं। यह खेल नगर के मुख्य चौवटे में रात को दस बजे से प्रारम्भ होकर प्रात: सात बजे तक चलता है। नगर के सभी निवासी चाहे वे किसी भी धर्म या जाति-पांति के हों, इसमें भाग लेते थे। चौवटे में पाट रखकर एक खुला मंच बनाया जाता है। यह मंच लकड़ी के बड़े-बड़े पाटों पर बनाया जाता है। इन पाटों पर सुन्दर तख्त बनाया जाता है। जिस पर राजा-रानी तथा राजकुमार आदि बैठते हैं। शेष समस्त पात्र नीचे बैठते हैं। सामने एक दरी बिछी रहती है। दरी के नीचे बालू रेत डाल दी जाती है। इस दरी के चारों ओर लोग गोल आकार में बैठ जाते हैं। मंच के सामने दूसरी दरी पर टेरिये बैठते हैं जो अपने टेर-बोलों से ख्यालों में दुगुनी रंगत पैदा करते हैं।

प्रारम्भ में कलाकार मंच के ऊपर अपने स्थान से एक शेर बोलता है और गुरु को प्रणाम करता है। खेल में सर्वप्रथम भंगी (मीठू) आता है और टेर बोलता है। समस्त टेरिये उसकी टेर को दोहराते हैं तथा अंत में जय-जय-जय-जय जगदम्बा माता की

ध्वनि उच्चारित की जाती है। टेरिये जब टेर बोलते हैं तब अभिनयकर्ता नृत्य करके लोगों का मनोरंजन करता है। भंगी के बाद भिश्ती आता है जो छिड़काव करने का अभिनय करता है तथा अपना परिचय देता है। इसके बाद फर्राश हलकारा आता है। राजा और रानी पालकी पर बैठकर आते हैं।

सारी रात खेल समय और वातावरण के साथ-साथ अनेक राग-रागनियों में बदलता हुआ दर्शकों का मनोरंजन करता है। प्रात:काल सारे कलाकार अपने इष्टदेव श्री लक्ष्मीनाथजी, गजानंदजी, हनुमानजी व कुलदेवी के दर्शनार्थ जाते हैं जहां प्रसाद चढ़ाकर नाचगान व वंदन करते हैं।

मंच बनाने का कार्य नाई लोग तथा अन्य अखाड़े के सहयोगी करते हैं। नगर के व्यापारी, सेठ-साहूकार अपनी ओर से पूरी-पूरी मदद करते हैं। सारी रात भर दर्शक कलाकारों पर घोल करते हैं। यह घोल चार आने से लेकर एक सौ एक रूपये तक होती है। घोल औरतें और पुरुष दोनों करते हैं। इसमें कोई पुरुष या स्त्री कलाकार के पास आकर रूपये लेकर उसके सिर पर सात बार घुमाते हैं और उसके बाद पास खड़े नाई को दे देते हैं। नाई उसको पेटी में डालता है। प्रात:काल यह घोल नाई तथा अन्य सहयोगियों में बांट दी जाती है।

रम्मत का सारा साज-सामान खेल मण्डली का अपना होता है। कलाकार खेल करने से पहले एक माह तक तालीम लेते हैं। कलाकारों को उस समय दूध, इलायची, मिसरी, कुलंजन तथा कालीमिरच से बनी फंकी गले को साफ रखने हेतु दी जाती है। साज के रूप में यहां पर ढोलक, तबला, झांझ और चिमटा काम में लिया जाता है। हारमोनियम भी साथ में बजता रहता है।

पात्रों की वेशभूषा पात्र के अनुसार होती है। औरतों के सिर पर भी पाग (पगड़ी) लगाकर तुर्राकलंगी आदि से उसे सजाकर केश्वा के रूप बनाने का रिवाज है। यह पाग मुख्य स्त्री पात्र रानी को ही पहनाई जाती है। अन्य स्त्री पात्रों को राजस्थानी लहंगा, पोलका तथा चुनरी ओढ़ाई जाती है। पुरुष लोग, पगड़ी, जैसलमेरी गोल मोठड़ा, फेंटा, अछकंद, चूड़ीदार पाजामा पहनते हैं तथा हाथ में तलवार रखते हैं। राजा के पास सोने की मूंठ की तथा अन्य पात्रों के पास चांदी व लोहे की मूंठ की तलवार रहती है। ये कलाकार अपने शरीर पर सैकड़ों तोला सोना, चांदी तथा जवाहरात का जेवर पहनते थे। इनका प्रबन्ध नगर के निवासी करते थे। प्रकाश हेतु बड़ी-बड़ी मशालें जला करती थीं। मेकअप हेतु पाउडर के स्थान पर सफेद मिट्टी, गुलाल, लाल रंग का गेरु, मेहंदी, काजल, काली स्याही, भौडल तथा सुनहलिया रंग काम में लिया जाता था। दाढ़ी-मूंछें ऊन व बकरी की जटा की बनाई जाती थीं। आजकल नये प्रसाधन काम में लिये जाते हैं।

जैसलमेर में कृष्ण कम्पनी नामक एक संस्था कार्य करती है। इसका कार्यालय चैनपुरा में है। इस संस्था के सदस्यों में पुष्करणा ब्राह्मण, शाकद्वीपी ब्राह्मण, भाटिया, माहेश्वरी, जैन, हिन्दू, मुसलमान आदि मुख्य हैं। इस कम्पनी के पास अपना साज-सामान है। इसमें भाग लेने वाले कोई पेशेवर कलाकार नहीं होते, सभी लोग शौकिया हैं।

यहां की रम्मतों का मुख्य अखाड़ा राम अखाड़ा या तेज अखाड़ा था। इसके मुख्य उस्ताद कवि तेज थे। सभी अखाड़ों वाले कवि तेज को अपना गुरु मानते थे तथा कवि तेज का चित्र मंच पर लगाते थे। सर्वप्रथम हिंगलाज देवी की पूजा के बाद गुरु की पूजा करते थे तथा बाद में खेल शुरू करते थे।

जैसलमेर नगर के अन्दर लोग अपने-अपने मोहल्लों में भी खेल खेला करते थे। इसमें दरजियों का बास, न्यारियों का वास, चूड़ीगरों व छड़ीदारों का वास, गुलास्तला आदि मुख्य थे। होली के आसपास इन अखाड़ों में रम्मतें गूंजने लगती थीं।

आज भी जैसलमेर में अनेकों कलाकार हैं जिन्होंने कवि तेज के साथ रम्मतों में भाग लिया था। इनमें सर्वश्री सगतमल शर्मा, बुलीदान ओझा (गदिया महाराज), बुलीदान बिस्सा, फवाभाप्रोहित, किशनलाल सेवक, जेठमल सेवक, तुलसीराम सुपुत्र तेज कवि तथा दामादरदास के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान खिलाड़ियों में उस्ताद प्रेमराज सेवक, वासुदेव बिस्सा, जुगलकिशोर जगाणी, अमृतलाल सेवक, नवरतनमल सेवक, मुकनलाल जगाणी, नन्दकिशोर शर्मा, खेताजी हजूरी, नेनाराम व्यास, परमानंद सेवक तथा जीवणलाल व्यास मुख्य हैं।

इन ख्यालों में निशुल्क तबला, ढोलक, झांझ तथा चिमटा बजाने वालों में सर्वश्री कुंदनलाल जगाणी, जीवणलाल व्यास, दीनदयाल गोपा, बुलीदान व्यास, मोहनलाल वोहरा, राणीदान छंगाणी, सुन्दरलाल जगाणी तथा मोहनलाल ओझा के नाम प्रमुख हैं।

जैसलमेर की रम्मतों में मुख्यत: कालिंगड़ा, केरवा, आसावरी, पीलू, बिहाड़ा, मांड, भेरवी तथा प्रभाती रागों का प्रयोग होता है। इसके अलावा लावणियां, लगड़ी, कवित्त, छंद, दोहे, सवैया, सोरठे तथा लोकगीतों की रागों को भी प्रयुक्त किया जाता है। ख्यालों के संवाद पद्य और गद्य दोनों में बोलने की प्रथा है मगर तेज कवि के समस्त ख्याल पद्य युक्त हैं। यहां के लोग अधिक अलाप से शेर कालिंगड़ा बोलते हैं। दोहे दो से लेकर आठ पंक्तियों तक के होते हैं।

नृत्य में छाछी छम व एक दो तीन तालों पर नृत्य होता है। राजा तलवार लेकर नृत्य करता है। रानी, दासी, वेश्या अपने पात्र के अनुसार नृत्य करती है। हलवार छड़ी से, मेहतर झाड़ू लेकर तथा तम्बोलन पान बेचती हुई नृत्य करती है। नृत्य व गायन दोनों साथ-साथ चलता है।

खेल के मध्य में हास्य और व्यंग्य के रूप में बहुरूपियों का वेश धरकर कई मसखरे आते हैं जो कभी मूक अभिनय करके जनता के मन को मोह लेते हैं। ख्यालों को बड़ा करने के लिये कभी-कभी छोटे-छोटे इस तरह के ख्याल उसमें जोड़ दिये जाते हैं।

जैसलमेर में कवि तेज के समय से ही कुछ ख्याल पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इनसे पूर्व की समस्त ख्याल पुस्तकें अप्रकाशित हैं जिनमें पंजाबी छेला, शैतान सुन्दरी, मग सूर्य प्रकाश दूसरा भाग आदि हैं। प्रकाशित ख्यालों में मूमल-महेन्द्रा, छेला तम्बोलन, नेनाखसम, राजा जोग भृतहरि तथा मोतीलाल सुगनलाल की सती सावित्री तथा विस्वा की सेठ-सेठाणी आदि के नाम महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रकाशकों में सेठ चिंतामणदास जनदाणी, जेठमल मेहता, किशनलाल बोहरा, वैधराज अम्बालाल चतुरभुज गठरा, शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु मुम्बई, कृष्ण कम्पनी जैसलमेर तथा मोतीलाल सुगनलाल शिकारपुर के नाम खास हैं।

चहुंओर फागुन रस बरसे सखी

-अर्जुनदास केसरी-

गांव का हर मौसम सुहावना होता है। हर मौसम में अलग-अलग गीत गाये जाते हैं। वर्षा में कजली, जाड़ा में बिरहा, लोरकी, चनैनी, विजयमल और गर्मी में वसन्त का आगमन होते फाग और चैता के बोल सब जगह सुनाई पड़ने लगते हैं। फाग को ग्रामीण जनता फगुआ या फगुवा कहती है। फगुआ का परिष्कृत रूप ही फाग है। यह फागुन या फाल्गुन शब्द से बना है। फगुआ या फाग नाम इसका इसलिए पड़ा कि यह प्राय: फागुन में ही गाया जाता है। फाल्गुन का महीना प्रारम्भ होते यह गीत प्रारम्भ हो जाता है। पहले फाग गाने का अधिक प्रचलन ग्रामीण अंचलों में ही था परन्तु अब इसे नगर निवासी भी बड़े आनन्दोत्साह के साथ गाते हैं। इसी को होली गीत भी कहा जाता है।

यह उत्सव पहले मदनोत्सव या वसन्तोत्सव के रूप में मनाया जाता था। राजा एवं देवता लोग भी इस उत्सव को मनाते थे। फाग गीतों में शंकर-पार्वती तथा राधा-कृष्ण के नाम बहुलता से मिलते हैं। संस्कृत-ग्रन्थों में राजा उदयन द्वारा इस उत्सव को मनाये जाने का प्रसंग बहुत मिलता है। सम्भवत: यह पर्व राजा-प्रजा के सम्मिलन पर्व के रूप में कभी मनाया जाता रहा होगा।

यह पर्व भारत का एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्व है जिसमें हर वर्ग एवं हर सम्प्रदाय के स्त्री-पुरुष भाग लेते हैं। ढोल-मजीरा के बाजे से सारा वातावरण अनुरंजित हो उठता है। रंग-अबीर के फुहारे उड़ने लगते हैं। पिचकारी से स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को तरातर कर देते हैं। इस पर्व में मर्यादा तोड़ देने की भी छूट है। फाग का ही एक बोल है-

फागुन में बाबा देवर लागी, फागुन में।

ग्रन्थों में शिव-पार्वती के विवाह का प्रसंग बहुत मर्मस्पर्शी माना जाता है। ग्राम्यगीतों में भी यह प्रसंग अपना महत्त्व रखता है। पार्वती के व्याज से गांव की एक नव विवाहिता बाला अपने हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति देखिये कितने मार्मिक ढंग से करती है। अनमेल विवाह का एक सुन्दर चित्र उमड़ आया है -

बर बउरहवा मैं पवलू हे गोइयां,
भांग धतूर जहर पिअवइया। बर...।
बेल-पत्ती गांजा मन भावै,
बहुत है दम लगवइया हे गोइयां। बर...।
डकर मरु तिरसूल लिये है,
बाघम्बर ओढ़वइया हे गोइयां। बर.. ।
बगरल तन पर भष्म गले मुंडमाला,
सिर से बहे गंगा मइया हे गोइयां। बर...।

फाल्गुन पुरुषों के कामोत्तेजना का मास है। भंग-धतूर खाकर लोग फाग गाते हैं और अपनी सुधबुध खो देते हैं। कहते हैं, श्रावण के दिन स्त्रियों के लिए अधिक मादक होते हैं, किन्तु फाल्गुन के दिन भी कुछ कम मादक नहीं होते। फाल्गुन में भी हर स्त्री अपने पति का सान्निध्य प्राप्त करना चाहती है और न प्राप्त कर सकने पर अतिशय कष्ट का अनुभव करती है-

चहुं ओर फागुन रस बरसे सखी,
गये स्याम सलोना घर से। टेक।
कइसे अबीर रस बरसे अगनवां,
रंग बेदरंग किये मोरे सजनवां।
बजत बंसुरिया अधर से सखी। गये...।
पायल फागुन मस्त महीना,
आवे ख्याल रह-रह वो दीना।
तरसे ब्रजबाला कहर से सखी। गये...।
कौल किये आयेंगे परसों,
बीते परसों, नरसों, बरसों
जोहत रख मास डगर से सखी। गये...।

कहीं-कहीं स्त्री और पुरुष दोनों मिल कर फाग गाते हैं। फाल्गुन के दिन में साधारण ठंड रहती है। अत: प्राय: गांव के किसी सार्वजनिक स्थान पर रात में आग जला दी जाती है। गायक मण्डली वहां एकत्र होती और फाग गाती है। गाने का यह क्रम रात-रात भर चलता रहता है। कभी-कभी गाने वालों में प्रतियोगिता हो जाती है। कभी-कभी तो गले में ढोल-हारमोनियम बांध कर गलियों के घूम-घूम कर होली गायी जाती है। गायकों का समूह दरवाजे-दरवाजे जाता है। घर का सयाना निकलता है और अबीर आदि लगाता है, इलायची आदि के द्वारा स्वागत करता है।

फाग लोकगीतों में सर्वत्र भावों की ही प्रधानता है। मर्मस्पर्शी स्थलों की सर्वत्र भरमार है। एक लोकगीत देखिए, उसमें नायिका की साध का कितना मनोहारी प्रसंग उपस्थित किया गया है। उच्च साहित्यिक कोटि की रचनाओं में भी ऐसी भावना देखने को प्राय: नहीं मिलती-

मोहि नई चुंदर रंगवादे सजनवां,
आगयी ऋतु फागुन की। टेक।
आजै कोई नौकर पठवा के,
रेंगरेजवा के घरे बोला के
बेलकुल बात समझादे सजनवां। आगयी...।
कह दो चूंदर रंगे मोरे मन कै,
मूर्ति रहै सगरे देवन कै,
अदां अदां बइठा दे सजनवां। आगयी...।
रंग गुलाबी और केसरिया,
हरा रंग से रंगे किनरिया,
और सुर्ख प्रन्दर फुरमा दे सजनवां। आगयी...।

कई प्रकार के होली गीत गांवों में गाये जाते हैं। कुछ गंदे और भद्दे किस्म के श्रृंगारित होते हैं जिनका समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है, किन्तु सभी ऐसे नहीं होते। उनमें अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले भी होते हैं। एक घोर श्रृंगारिक गीत देखिये-

सेजिया जिया मार, हाय बेदर्दी बालम। टेक।

फागुन में भी बादल आते, गरज़ते, बरसते और बिजली चमकाते हैं, किन्तु ये और भी पीड़ावर्द्धक कहीं होते हैं-

दमिनि दमकै, चमकै, पिया नाहीं हमार,
पापी पपीहा पुकारे - 'पी-पी' दे जिया जार। हाय...।
रह रह जिया घबराये हो, ना भेजे संदेश।
पापी पिया क्यों छाये, गयनो हो विदेश।
फागुन करत अंदेशा, बड़ कलेश देहऽडार। हाय...।

इस प्रकार के अनेक मार्मिक स्थल फाग लोकगीतों में विद्यमान हैं जिनका सही एवं साहित्यिक मूल्यांकन होना चाहिए। ये लोकगीत भारतीय संस्कृति की अक्षय निधियां हैं ।

पोथीखाना

होरी, लूर, कबीर लगाओ लाल गुलाल अबीर

अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'लूर' का वर्ष 17 का यह संयुक्तांक जून-2023 का है। त्यौहारों में होली ही ऐसा त्यौहार है जो हर दृष्टि से जीवन में मुक्त उमंग, मुक्त उल्लास और मुक्त अंगड़ाई लिये आता है और क्या पुरुष, क्या महिला और क्या बाल-बालिका सबके दिल खोलकर ताजगी का एहसास कराता है।

एक माह पहले से ही इसकी आहट शुरू हो जाती है। प्रकृति भी अपने मिजाज से इसका संकेत देती पाई जाती है। हवा का रूख भी बदल जाता है। चारों ओर विविध वाद्यों की तरंगों के साथ मानव मन गाते, नाचते इस रंगोत्सव को और अधिक, अधिाधिक रंगमय बनाता फूला नहीं समाता है।

लूर के सम्पादक डॉ. जयपालसिंह राठौड़ ने अपने सम्पादकीय में लिखा- ''होरियों में विषय की विविधता मिलती है। इन होरियों में प्रथम पूज्य गणेश की होरी, पौराणिक व लोक देवी-देवताओं, भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंग से जुड़ी होरियां, पेड़-पौधों, लताओं, पुष्पों को सम्बोधित होरियां तो पशु-पक्षियों से जुड़ी होरियां जिनमें मोर, तोता, मैना इत्यादि मुख्य हैं। कृष्ण व गोप-गोपियों की बाल-लीलाएं इन होरियों में जगह-जगह मधुरता के साथ रेखांकित हैं।

मारवाड़ विशेषकर जोधपुर के आसपास के गांवों में चंग के साथ फागण गायन का चाव है। इन फागण गीतों में विषय की विविधता और अधिक है- दो-दो पंक्तियों में लोक देवी-देवता का स्मरण, आभार, इतिहास से जुड़ी शौर्य-घटनाएं व जनाक्रोश, दया, परोपकार व जनकल्याण, अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी से जुड़ी घटनाओं को याद किया जाता है। जहां महाराणा प्रताप, दुर्गादास, शिवाजी के शौर्य को दाद दी गई है तो अंग्रेजों के समय स्वतंत्रता आन्दोलन के उदात्त वीर चरित्र ठा. खुशालसिंह आऊवा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, भरतपुर के राजा, आसोप, गूलर जैसे ठिकानों के तत्कालीन योगदान को जनसाधारण ने होली गीतों की मोतियों की माला में पिरोकर बांधा है।

जयपुर के आसपास शेखावाटी क्षेत्र में होली लोक-गीतों को धमाल भी कहा जाता है। वहां बांसुरी व ढफ के साथ नृत्य करते हुए धमाल गायन की परम्परा रही है। इन गीतों के विषय भी बहुत रोचक व मधुर हैं। वर्तमान समय में दूर दराज के गांवों में होली के 5-7 दिन पूर्व चंग की थाप, होरी व लूर गीतों के स्वर सुनाई दे सकते हैं तो कहीं होली से एक-दो दिन पूर्व ही लोगों को अपने काम से फुर्सत मिलती है जब शकुन रूप में चंग बजाते हैं। होलिका दहन के समय जरूर चंग बजाकर होरी गीतों के गायन की परम्परा रही है। दूसरे दिन रामा-श्यामा को होली की गैर घर-घर जाकर गुड़-सुपारी की मनुहार के साथ होरियां गाते हैं। यह कार्यक्रम कहीं-कहीं सात दिन तक

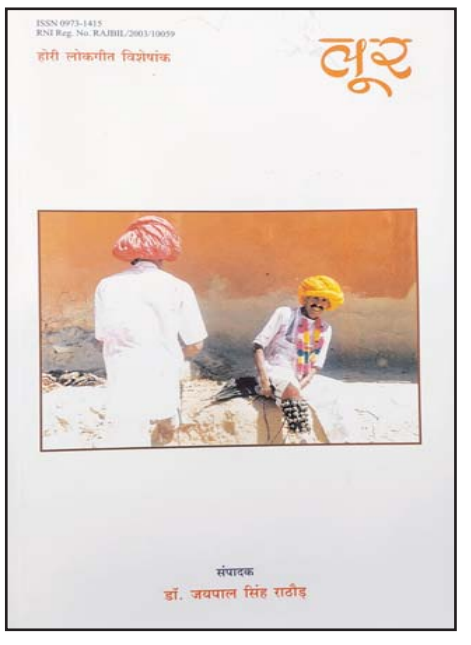

शीतला सप्तमी के मेलों तक चलता है। माता के मेलों और कहीं-कहीं गणगौर मेलों तक गायन-गैरों का वातावरण रहता है। फिर पूरे वर्ष तक चंग व होरी गायन नहीं सुनाई देते।''

यह विशेषांक पृ. 21 से 148 तक होरी गीतों का संग्रह लिए बड़ा ही दुर्लभ और मूल्यवान होने के साथ-साथ बड़े कठिन परिश्रम की खोजयात्रा कर एकत्र लोकगीतों से समृद्ध किया गया है। डॉ. जयपालसिंह राठौड़ ने लिखा भी- '' इन होरी, फागण, धमाल लोकगीतों की संकलन यात्रा 1940-50 से प्रारम्भ होकर लगभग वर्ष 2005 तक की है। पूर्व में पिलानी शोध संस्थान में श्री पतराम गौड़ ने सन् 1943 में भी जनसाधारण में प्रचलित होरियों का संकलन किया था और मैंने अपने शोधग्रंथ को तैयार करते समय राजस्थान की लम्बी दूरियां तय करके ही बहुत ही कठोर परिश्रम व अल्प साधनों से होरी व लूरों का संकलन किया था। लूरों पर लूर पत्रिका का पहला विशेषांक प्रकाशित हो गया। होरी गीत अप्रकाशित ही रहे। अब सुअवसर आ गया है जब पाठकों के सामने बहुत विशेष होरी गीत प्रकाशित हो रहे हैं।''

अन्त में उन्होंने लिखा-''परिस्थितिवश लूर का प्रकाशन समय पर नहीं हो पा रहा है। यह बात हम दोनों भाइयों को भी कचोटती है परन्तु धीरे-धीरे ही सही, किसी ठोस विषय पर लूर का प्रकाशन होता रहे तो हम सबके लिए आनन्द का विषय रहेगा।'' (पृ. 7)

सम्पादकीय के पश्चात डॉ. महीपालसिंह राठौड़ विशेषांक में संकलित होरी गीतों पर अपने विशिष्ट आलेख में लिखते हैं- ''लोक ने उन्हीं बातों को स्वीकार किया है जो जीवनमूल्यों से जुड़ी हुई हैं। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हैं तो हमें इस बात की जानकारी मिलती है कि पृथ्वीराज रासो, ढोला मारू रा दूहा, सन्देश रासक, पद्मावत से लेकर कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा राधा-कृष्ण, गोप-गोपियां इन सभी के बीच होली एक राग रंग का त्यौहार है जहां नायक-नायिकाओं के बीच होली को लेकर बड़ी उमंग है। उन्हें इस बात की बराबर चिन्ता है कि इस होली पर तुम नहीं आये तो मैं नृत्य करती हुई जलती होली में कूद पड़ूंगी।

यह प्रेम का सर्वस्व समपर्ण है जो एक नायिका अपने नायक के प्रति करती है वहीं कवि की कल्पना भी उसमें उदात्त भाव को व्यक्त करती है। जीवन में जब भौतिक संसाधनों का अभाव था तो उत्साह और जीवटता थी। अब भौतिक संसाधनों की उपस्थिति ने हमारे में वासनाओं का डेरा जमा लिया है।

होली के अवसर पर पुरुष वर्ग जो मारवाड़ में लोकगीत गाता है उसे 'होरी' कहते हैं और शेखावाटी में धमाल साज बाज में चंग, डफ, बांसुरी व झिंझा की जोड़ी है। कृषक व श्रमिक वर्ग की महिलाएं रात को गांव के गुवाड़ व चौवटे पर समूह में नृत्य करती हुई जो गीत गाती है उन्हें 'लूर' कहते हैं। होली के दिन एक दूसरे प्रकार का भी गीत गाया जाता है जिसे 'कबीर' कहते हैं। ये गीत प्राय: अश्लील होते हैं।

जीवन के प्रत्येक पक्ष को लेकर होरियां हैं। इन होरियों में गणेश वन्दना है तो सदाशिव भोले अमली को गांजा पीने का आग्रह भी है। शिव को अमली कहा गया है। राम का वनवास गमन, सीता हरण, राम रावण संग्राम, राम भरत का मिलन ये रामायण काल के ऐसे प्रसंग हैं जैसे अन्यत्र दुर्लभ हैं। तुलसीदास के रामचरित मानस में भी ऐसा मिलन का रूपक नहीं है जैसा यहां एक होरी में हमें देखने को मिलता है।

मेरा मतलब गांवों में प्रचलित गीतों और कथानकों से है। वहां हम प्रेम और वियोग में तड़पते हुए सच्चे हृदयों का वर्णन पाते हैं। भाई से विच्छिन्न बहन की करूण कथा, सौत के, ननद और सास के अकारा निश्चत वाक्य-वाणों से बिद्ध बहू की मर्म-कहानी, साहूकार, जमींदार और महाजन के सताये गरीबों की करूण पुकार, आन पर कुर्बान हो जाने वाले विस्मृत वीरों की वीर्य गाथा, सती का वीरत्वपूर्ण आत्मघात, नई जवानी के प्रेम के घात-प्रतिघात, प्रियतम के मिलन-विरह और मातृ-प्रेम के अकृत्रिम भाव इन गीतों में भरे पड़े हैं। यही हिन्दी भाषा की वास्तविक विभूति है। इनकी एक-एक बहू के चित्रण पर रीतिकाल की सौ-सौ मुग्धाएं, खण्डिताएं और धीराएं निछावर की जा सकती हैं क्योंकि ये निरलंकार होने पर भी प्राणमयी हैं और वे अलंकारों से लदी हुई होकर भी निष्प्राण हैं।

मौखिक परम्परा में प्रचलित यह साहित्य ही वास्तव में भारतीय साहित्य परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है जो वादों और विमर्शों से दूर है। हमारी जड़ें लोक में हैं और लोक से सम्पृक्त रहकर ही हम अपने जीवन को सरस और प्रांजल बना सकते हैं। केवल बौद्धिक ज्ञान जीवन की एक दिशा है वहां समग्रता का अभाव है। इन गीतों को भी हमारे पाठ्यक्रम में जोड़ने की आवश्यकता है।''

गोपालबाड़ी, चौपासनी, जोधपुर-342008 से प्रकाशित यह विशेषांक 200 रूपये मूल्य का है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्र (4)

शब्द रंजन के 15 मार्च 2024 के अंक में आप पढ़ चुके हैं, क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्रों में असगर वजाहत, मणि मधुकर, हेतु भारद्वाज, हरिपाल त्यागी, हरमन चौहान, असद ज़ैदी, राजेश जोशी, राजेन्द्र यादव तथा रवीन्द्र राजहंस के पत्र। यहां पढ़िये अन्य साहित्यकारों के पत्र –

(1)

नंद भारद्वाज का गुवाहाटी से लिखा दिनांक 10 अक्टूबर 1998 का पत्र –

प्रिय भाई,

ऊपर लिखे पते से आश्वस्त हो गये होंगे कि अब यहां पहुंच गया हूं। केन्द्र सरकार की सेवा के ये छसतूर तो निभाने होते हैं। देखें कितने दिन। महीने। साल इधर गुजरते हैं! भौगोलिक दूरी जरूर बढ़ी है, बाकी अपने राम तो आज भी वहीं आपही के आसपास रमें रहते हैं। आप चाहें तो सुध लें, न लेंगे तो भी हम तो दस्तक देंगे ही। क्या हुआ, 'सम्बोधन' के अंक का! अगर छप गया हो तो इस पते पर एकाध प्रति भेजिए न, ताकि कुछ एकाकीपन कम हो। कुछ सम्वाद की सूरत बने।

हिंदी के वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार प्रो. नंद चतुर्वेदी, तत्कालीन जिला कलक्टर राजसमंद वी. के. सिंह, कर्नल देशबंधु आचार्य, वरिष्ठ साहित्यकार और जोधपुर उच्च न्यायालय के मशहूर एडवोकेट मरुधर मृदुल और क़मर मेवाड़ी वरिष्ठ कवि एवं दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक नंद भारद्वाज को आचार्य निरंजननाथ सम्मान भेंट करते हुए।

पिछले दिनों जब जयपुर में था आप की ओर से निरंजननाथ आचार्य पुरस्कार की एक विज्ञप्ति देखी थी। सोचा था आपको इसी बहाने अपनी आलोचना पुस्तक 'साहित्य परम्परा और नया रचनाकर्म' की दो प्रतियां भेज दूं लेकिन समय की कमी और बाकी कामों की भागदौड़ में वह काम तो रह ही गया। यहां तो प्रतियां भी नहीं हैं, क्या हो सकता है? कुछ नहीं हो सकता। वैसे भी यह कोई प्रतियोगिता में भाग लेने की उम्र नहीं है।

अभी नये इलाके को देख-समझ रहा हूं। फिर कभी कहीं बोलूंगा। पत्र दें।

आपका
नंद भारद्वाज

(2)

सुरेश तिवारी का रोहिणी, नई दिल्ली से लिखा दिनांक 21 फरवरी, 2003 का पत्र –

आदरणीय भाई श्री मेवाड़ीजी,

एक लम्बे समय बाद 'सम्बोधन' का अंक देखने को मिला है और उसमें आये परिवर्तनों को देखकर खुशी हुई कि समय की गति के साथ आप चल रहे हैं। रंगीन मुखपृष्ठ और आकर्षक छपाई ने पत्रिका को नया रूप दिया है। नासिरा शर्मा से महेश दर्पण की बातचीत, नासिराजी के विचारों को समझने में काफी मददगार है। नासिराजी आज की एक सजग कथाकार हैं परन्तु उनका लेखन भी वैविध्यपूर्ण है। महेश दर्पण सिर्फ कथा तक ही सिमटकर रह गए हैं। अलग आयामों की तरफ उनका ध्यान गया ही नहीं है जिसमें कुछ अपूर्णता का भाव साक्षात्कार में है।

एखलाक अहमद ज़ई की कहानी आज के समय पर बहुत करारा व्यंग्य करती है। चार्ली चैप्लिन की आत्मकथा काफी रोचक है। इनके कुछ अंश छापें। शभकामनाओं सहित।

आपका ही
सुरेन्द्र तिवारी

(3)

शांति भारद्वाज 'राकेश' का कोटा जंक्शन से दिनांक 01 अगस्त, 1997 का लिखा पत्र –

भाई

राजकीय सेवा से निवृत्ति के अवसर पर 'हमारा हिन्दुस्तान' में प्रकाशित माधव नागदा का परिचयात्मक आलेख पढ़ा। कुछ बातें नई भी जानी। मेरा अनुभव यह है कि यह निवृत्ति तुम्हें कुछ अधिक करने में प्रवृत्त करेगी। अब तुम वह सब पूरा कर सकोगे, जो इन व्यस्तताओं से आज तक नहीं कर सके।

जो करते रहे हो, उसे करते रहना ही तुम्हारी नियति है। ऐरे गैरे लफड़ों में मत पड़ना। तुम जो भी श्रेष्ठ दे सकते हो, उसका एकमात्र माध्यम तुम्हारी कलम ही है। इसे भूलोगे तो डूबोगे। याद आते रहते हो। मंगल कामनाओं के साथ–

तुम्हारा
शांति भारद्वाज 'राकेश'

(4)

स्वयं प्रकाश का अजमेर से दिनांक 10 जून 1987 का लिखा पत्र –

हिंदी के प्रकांड विद्वान असद ज़ैदी को आचार्य सम्मान समिति के अध्यक्ष कर्नल देशबंधु आचार्य, क़मर मेवाड़ी और डॉ. रमेश 'मयंक' ने शॉल, श्रीफल और स्मृतिचिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

प्यारे भाई,

मैं बाहर गया था। लौटने पर आपका पत्र मिला। जवाब नहीं दिया कि चलो इसी बहाने आप पांच तारीख को आओगे पर आप नहीं आ पाये। जाने से पहले एक पत्र डाला था जिसमे पूछा था कि 'सम्बोधन' प्रलेस की मुखपत्रिका नहीं होने जा रही है क्या? क्योंकि वेदव्यास ने मुझे ऐसा ही लिखा था। लगता है वह पत्र आपको नहीं मिला।

मैं बहुत-बहुत फंसा हुआ हूं। फिलहाल पहली फुर्सत मिलते ही कहानी टीपकर भेजूंगा। वह मेरे संकलन 'आसमां कैसे-कैसे' में है। कथा प्रतिमान में तो है ही। मेरे हाथ से लिखी प्रति भी अकादमी में होगी। उदयपुर जाना हो तो वहां से ले आयें।

और आशा है सानन्द हैं। मैं शिमला गया था। लौटने में दिल्ली और अजमेर रूक गया। आजकल नौकरी और परिवार सम्बन्धी उलझनों में गले-गले हूं। और क्या ठाठ है। आशा है बढ़िया अंक निकालोगे।

व्यंग्य लौटाओगे न? साथ में उस्ताद की 'आग' भी भेजना न भूलना। याद से। सभी साथियों को अभिवादन।

आपका
स्वयं प्रकाश

(5)

स्वयं प्रकाश का चित्तौड़गढ़ से लिखा दिनांक 03 जनवरी 2001 का यह पत्र –

प्रिय क़मर भाई,

नया साल मुबारक हो।

अंक मिल गया। परिचर्चा बहुत बढ़िया है। बरसों बाद किसी पत्रिका के कहानी विशेषांक में इतनी ठोस परिचर्चा छपी है। मुबारक हो। कहानियां पढ़कर लिखूंगा। रमेश की कहानी पढ़ी। अच्छी लगी। राजेन्द्र यादव से बातचीत भी पढ़ ली। सम्पादकीय भी। सम्बोधन के सहयात्री की समीक्षाएं देखीं। बाकी मस्ती है। पिछले दिनों संगम के आयोजन में अहमदाबाद गया था। वहां संजीव, शिवमूर्ति, जननंदन, प्रियवंद, जितेन्द्र भाटिया, सुरेन्द्र प्रकाश, गोविन्द मिश्र, अवधेश प्रीत, ऋषिकेश सुलभ, मरीकसिंह दीप, वीरेन बड़थवाल, रमेश बतरा, अजित राव, वेद प्रकाश, अमिताभ, ओमा शर्मा, प्रेमपाल शर्मा, आदि से अच्छी मुलाकात रही। 16-17 फरवरी को इन्दौर में पहल सम्मान है। चलेंगे क्या? शेष बढ़िया। नरेन्द्र शर्माजी को नमस्कार और नये साल की शुभकामनाएं।

आपका
स्वयं प्रकाश

(6)

शंभुनाथ का हावड़ा से 20 मई 2000 का लिखा पत्र –

प्रिय क़मर मेवाड़ीजी,

पिछले महीने पैर की हड्डी टूट जाने के कारण ज्यादा कुछ कर नहीं सका। मैं यह पत्र आपको काफी पहले लिखने वाला था। जयपुर में सितम्बर मध्य में राष्ट्रीय लघु पत्रिका समन्वय समिति का चौथा सम्मेलन प्रस्तावित है। आप हिन्दी के एक वरिष्ठ सम्पादक हैं। इस सम्बन्ध में अपने सुझाव दें। राजस्थान से निकलने वाली लघु पत्रिकाओं के इस सम्मेलन में एक बड़ी भूमिका है। कम से कम हम इस माकै पर विचारों का आदान-प्रदान कर सकेंगे। इस कठिन मौके पर कुछ मार्ग ढूंढ़ सकेंगे।

वैसे भी यह समय काफी प्रतिकूल है। फिर भी न्यूनतम सौहार्द और सम्वाद का वातावरण बनाना चाहिए। जून के अंत तक प्रकाश्य बुलेटिन के लिए लघु पत्रिका आन्दोलन की समस्याएं और नई दिशा पर अपने विचार भेजें। आशा है, कृपया अवश्य सहयोग देंगे।

आपका
शंभुनाथ

(7)

शंभुनाथ का हावड़ा से 28 जून 2000 का लिखा पत्र –

प्रिय क़मर मेवाड़ीजी,

राष्ट्रीय लघु पत्रिका समन्वय समिति का चौथा सम्मेलन जयपुर में होने की बात चल रही है। आप लघु पत्रिका आन्दोलन के सर्वाधिक वरिष्ठ सम्पादकों-लेखकों में हैं। आपसे अनुरोध है कि सम्मेलन सादगीपूर्ण, अर्थपूर्ण और फलप्रद बने, इसके लिए आप न केवल अपने सुझाव और विचार विस्तार से लिख भेजें बल्कि जयपुर के अपने साथियों को इस दिशा में सक्रिय करें। आपके विचार हम जुलाई 2000 के अंत तक निकलने वाले बुलेटिन में छापना चाहते हैं। सकुशल होंगे। प्रतीक्षा में,

आपका
शंभुनाथ

(8)

अनिल सिन्हा का लखनऊ से दिनांक 07 फरवरी 2005 का लिखा पत्र –

मेरे प्यारे भाई क़मर मेवाड़ी,

'सम्बोधन' (जनवरी-मार्च 2005) का अंक अचानक पाकर बिल्कुल विस्मित रह गया हूं। अचानक इतने वर्षों बाद, तुम्हें मेरी याद कैसे आई, क्या ही सुखद क्षण। मेरे लिए और सबसे बड़ी बात कि तुम 'सम्बोधन' लगातार निकाल रहे हो। यह एक उपलब्धि है। बधाई।

राजस्थान साहित्यकार परिषद कांकरोली द्वारा संस्था के संरक्षक मधुसूदन पाण्ड्या की अध्यक्षता में आकाशवाणी केन्द्र उदयपुर के कार्यक्रम अधिकारी और प्रसिद्ध ग़जलकार डॉ. अशरफ अली बेग का उनके नगर इलाहाबाद स्थानान्तरण होने पर सम्मान गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में संस्था के सभी सदस्य उपस्थित थे।

मैं तो तुम्हें पत्र लिख-लिख कर हार गया। जब कभी जवाब नहीं आया तो पिछले कुछ वर्षों से हारकर लिखना छोड़ दिया। करता भी क्या?

'सम्बोधन' के कवर पर बहुचर्चित लेखकों की तस्वीर अब हर अंक में दो। अंक मुझे 05-02-05 को मिला है। बस उलट-पुलट गया हूं पर अपने याद किये जाने से बहुत खुश हूं। इस अंक की सामग्री तो अब पढ़ूंगा। पहले पावती देना जरूरी लगा। जाने कितने सालों बाद 'सम्बोधन' देख रहा हूं।

तुम मजे में होंगे? अपने बारे में लिखा- घर, परिवार, लिखना-पढ़ना, पुस्तकें, स्वास्थ्य आदि सब कुछ।

तुम्हारा
अनिल सिन्हा

(9)

से. रा. यात्री का गाजियाबाद से दिनांक 10 दिसम्बर 2007 का लिखा पत्र –

प्रिय श्री क़मर मेवाड़ीजी,

सस्नेह स्मरण।

आशा है, आप सपरिवार स्वस्थ, सानन्द होंगे। आज 'सम्बोधन' का संस्मरण विशेषांक मिला। इतने बहुमूल्य अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं तथा बधाई। आपने श्री अवधनारायण मुदगल के विषय में मेरे उदगार प्रकाशित करने की जो सदाशयता बरती उसके प्रति में बहुत-बहुत उपकृत हूं। मैंने उनके सम्बन्ध में गहरी लगावट और संवेदना के चलते ही निस्पृह भाव से यह लिखा था।

मैंने अंक पाते ही श्री स्वामी वाहिद काजमी का संस्मरण पढ़ लिया है। अपनी बेलाग शैली में उन्होंने जो कुछ कहा है दिल दिमाग में सीधे उतरता चला जाता है। कृपया यथा शीघ्र अंक भेजने की व्यवस्था करें जिसमें मार्कण्डेयजी का साक्षात्कार है। वर्ष की सहयोग राशि दो-चार दिन में ही भेज दूंगा।

स्नेही शुभेच्छु
से. रा. यात्री

(10)

शिवरतन थानवी का फलोदी से दिनांक 19 जनवरी 2009 का यह पत्र –

प्रिय क़मर भाई,

नमस्कार। आपका 05-01-09 का पत्र 12-01 को मिला। आपका यह विचार जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्यजी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर पुस्तक निकालने का मन बना रहे हैं। अच्छा है। बहुत जानदार थे। विचारवान थे। सदैव क्रियाशील रहते थे। जहां भी खड़े होते उनकी प्रतिभा छलकती थी। विनोदी-वृत्ति हरदम उनके साथ चलती थी। जिस स्कूल में जाते वहीं बच्चों के बीच बैठ जाते और उनसे नाना तरह के सवाल करके सभी को सक्रिय बना देते। अध्यापकों में बैठते और लगता उनकी क्लास ले रहे हैं। ऐसी चेतना फैल जाती थी उनके सवालों में वहां भी।

मैंने सुना तो था पर देख भी लिया। बोरूंदा की उच्च माध्यमिक स्कूल में मैंने इन दोनों मोर्चों पर उनके इस रूप का साक्षात् दर्शन किया था। 63-64 में। रात ट्रैक्टरों की लाइटों में बैठकर मैंने वहां विजयदान देथा तथा आचार्यजी के साथ चूरमे के लड्डुओं का भोजन किया था। वह अनुभव आज तक भूला नहीं हूं। 'विद्यालयों ने कहा' की खोज जारी रखें। सीलबन्द अध्याय भी ढूंढ़ें।

सप्रेम
शिवरतन थानवी

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 मार्च 2024

सम्पादकीय

गैर होली की ठिठोली की

आम स्त्री-पुरुषों के मस्ती, अल्हड़ और उन्मुक्त अंगड़ाई का यदि कोई त्यौहार है वह होली है। महीने भर पहले से ही होली का उन्माद प्रारम्भ हो जाता है। चंग पर थाप पड़ते ही मादक मन अपने यौवन और उल्लास में फूट पड़ता है। मनचलों के फागुणिये ख्याल अश्लील बोलों से ओत-प्रोत, नानाप्रकार के लटकों में नटखटिये स्वांग मगर बुराई की बू तक नहीं। होली की रंग भरी ठिठोली में काम कौमार्य की बातें तो खूब मिलेंगी मगर मन मेला नहीं होगा। नृत्य, गीतों और अनुरंजन के विविध तौरतरीके। गैर, गींदड़, डांडिया, घूमरा नृत्य तथा बारूद और कोड़ों से होली का हुड़दंग। रसिये, फागणिये, लालकेस्ये।

इन्हीं दिनों का मशहूर शेखावाटी का गींदड़। गांव-गांव और मोहल्ले-मोहल्ले में गींदड़। बीच चौराहे पर मचान टाइप ऊंचा माच। भारी भरकम नक्काड़ों से गूंजित आकाश और उसके चारों ओर मोहल्ले भर के छोटे-बड़े गींदड़ नचैये। विविध रंगों, पोशाकों, छड़ियों में। नक्काड़ों की थाप- 'चले गींदड़ बजे डंका' के साथ-साथ गींदड़ चलती है। चक्राकार पुरुष, छड़ियों की नृत्यचापों की एकसी ध्वनि, सुरम्य शान्त रात का स्निग्ध वातावरण। चुरू, सीकर, मुकन्दगढ़, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़ सारे गढ़ के गढ़ गींदड़ से गूंजित हैं।

मारवाड़ का डांडियों-छड़ियों का डांडिया नृत्य और डांडिये नृत्याकार। रंगभरी भाव-भंगिमाएं और रंगी-पंगी पोशाकें, मन को मोह लेने वाले स्वांग-स्वांगीड़े। श्रृंगारिक गीत। आदिम जातियों के गैर-घूमरों का भी अपना सानी नहीं। पुरुष और स्त्रियों का सामूहिक सम्मोहन, वृत्त के भीतर वृत्त, घेरे के भीतर घेरा। स्त्रियां छड़ियां विहीन घूमरें लेती हैं और उनके चारों ओर पुरुष छड़ियों से गैर खेलते हैं। ढोल, मादल और थाली की ताल पर ठुमकती द्रुतलयी चकरियां छड़ियां।

होली का यह सब माहोल, मगर आज कहां? आज से बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व तक तो खूब था। गैरें हमने भी बहुत खेली हैं। ढोल के ढमाकों के साथ लहरदार छड़ियां छनछनाई हैं। आधी-आधी रात और पारली-पारली रात तक। अब तो राजस्थान प्रजास्थान बन गया। प्रजास्थान से राजस्थान अलग-थलग हो गया। कला कुम्हला गई, संस्कृति सिसक गई। ऐसा लगा कि सारी बातें जैसे स्वप्नवत् हो गई, पोथियों, बहिड़ों और खरड़ों में सिमट गई।

तो फिर आईं अकादमियां, इन कलात्मक सम्पदाओं को संजीवित करने के लिए, प्रदर्शित एवं प्रतिष्ठित करने के लिए, इनके खोये हुए मूल्यों को खनखनाने के लिए। राजस्थान में राजस्थान संगीत नृत्य और नाटक के क्षेत्र में सांस्कृतिक संस्थानों ने उम्दा काम किया। इन कलाओं के लुप्त हुए रूपों को पुनः प्रतिष्ठित करने का बीड़ा हाथ में लिया। होली, जिसका उल्लास गुलाल मुर्दानगी में बदल गया था, फिर से गुलहरा उठा।

होली के दिनों में महफिलों में गाळों के विविध रूप गायिकाओं से सुनने को मिलते हैं। ये गाळी गीत हैं। ब्याई सगे को भी ये गाळें सुनाई जाती हैं-

(1) ऊंची-नीची सरवर पाल (2) म्हारी प्रेम प्यारी हो थांणा धनस बाण ढीला (3) हरिया बांस रो पालणो रे लाला (4) नानी बाई रा ढोला आवणिया करोनी म्हारे देस (5) आंगिया में अंतर लगावे ब्याण आवेजी रा (6) धोलो घोड़ो रे पंचरंगियो रे पलाण (7) प्यारा म्हाने लागो जमाई सा (8) खम्मा कर राखूं हो बाई थांणा श्याम ने घणी खम्मा (9) जमाई सा म्हाने प्यारा लागे रा (10) वाल़ाजी-वाल़ाजी हो जुगवाला खेलारू री ओलूं (11) ढोला सांड्यो ललकार्‌यो जी रा (12) दो दन रे जावां रे वचना रा गाडा फेर मिलांगां (13) मोरवार लारे ई तो जमाई सा म्हारा (14) म्हें तो आया पामणा अणा ब्याईजी वाली ने लेवा ने (15) चालोनी ढोलाजी वणी देसड़ले चालां तो (16) को रा सगाजी वाली कितना थार (17) ओड्या-ओड्या रे नादान दुपट्टा समदर लेर का (18) थें मत बांधो म्हारा समधण व्याण जाली वालो नाड़ो (19) निसर-निसर ए दारी सगाजी वाली (20) हां ओ दारी रंगरंगीलो गोटो कां ठायो (21) मालजादी रा घर में कुण रे कुण (22) बोल्या राज बोल्या गाल़ां रे खातिर बोल्या (23) सगाजी वाली ने यार बुलावे राज (24) हां दुसाल़ा वालो प्यारो (25) हां म्हारी गाल़ी रो बुरो मत मानो सा (26) टोला में टलियो-टलियो जाय।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये
सदस्यता शुल्क :	
संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

मेवाड़ में राग-रंग की होली

– डॉ. कुलशेखर व्यास –

भारत संस्कृति प्रधान देश होने के साथ-साथ उत्सव प्रिय देश भी है। सनातन धर्म के अन्तर्गत भारत में वर्षभर के बारह मास में हिन्दी पंचांग के अनुसार विभिन्न पर्व, उत्सव एवं त्यौहार मनाए जाते हैं। इनमें फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा एवं चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को मनाए जाने वाले त्यौहार को होलिकोत्सव नाम से जाना जाता है।

इस त्यौहार की गणना भारतवर्ष में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहारों में की जाती है। यह राग और रंग का त्यौहार है। इसका उल्लास सर्वसामान्य जनता से लेकर राजघराने से सम्बन्धित जनों में एक समान देखा जा सकता है। उत्तर भारतीय राज्यों में यह त्यौहार बसन्त पंचमी से प्रारम्भ होकर रंग तेरस तक मनाया जाता है। इसी के अनुरूप यह त्यौहार अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग दिनों में मनाया जाता है, परन्तु होलिका दहन फाल्गुन मास की पूर्णिमा को ही मनाया जाता है तथा प्रतिपदा को रंगों के त्यौहार को तेरह दिनों में कभी भी मनाया जाता है।

मेवाड़ के वैष्णव मन्दिरों में बसन्त पंचमी से ठाकुरजी को सुगन्धित अबीर और गुलाल से श्रृंगार करवा कर उनके समक्ष चांग, ढफ, मृदंग और झांझ बजाई जाती है और साथ में फाग गाई जाती है। इसके साथ ही मेवाड़ के प्रमुख स्थानों पर फाल्गुन की पूर्णिमा से ठीक एक माह पूर्व माघ की पूर्णिमा को होली (विष्णु भक्त प्रहलाद रूपी सेमल के वृक्ष के तने से शाखाओं तक के भाग को) के स्तम्भ को रोप दिया जाता है तथा उसके तने और शाखाओं पर सूखी घास को बाँध दिया जाता है। उस रोपे हुए स्तम्भ का श्रृंगार किया जाता है, जिसकी शाखाओं पर गोबर से निर्मित वलूड़ियों की माला पहनाई जाती है। कहीं-कहीं साड़ी भी पहनाई जाती है।

प्रसिद्ध इतिहासकार एवं प्रसिद्ध रुद्रवीणा वादक स्व. डॉ. राजशेखर व्यास के अनुसार गाय के गोबर से वलूड़ियों की माला बनाई जाती है। गोबर द्वारा निर्मित वलूणियों में विभिन्न आकृतियाँ बनाई जाती हैं, जिनमें कुछ गोल-गोल पहिये जैसी आकृतियाँ बनाई जाती हैं, कुछ पान की, कुछ तारे की, एक सूर्य, एक चन्द्रमा, के साथ ही एक लम्बी जीभ की आकृति भी बनाई जाती है तथा एक नारियल और एक सुपारी की आकृति बनाई जाती है, जिसके मध्य भाग में छेदकर मोली में इन आकृतियों को पीरोकर माला का रूप दिया जाता है।

डॉ. व्यास के अनुसार गाय के गोबर से बनी यह आकृतियाँ बहन अपने भाई की लम्बी आयु और उसके सुखी जीवन में आने वाली किसी भी प्रकार की बाधा के निराकरण की कामना से बनाती हैं और होलिका पर धारण करवाती है। बहन द्वारा गाय के गोबर से बनाई गई यह आकृतियाँ होली की अग्नि में जल जाती हैं और अपने भाई के जीवन में आने वाली बाधाएँ भी इनके साथ जलकर राख हो जाती हैं।

होली के ठीक आठ दिन पूर्व यानी फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से होलाष्टक लग जाते हैं। इन होलाष्टक में किसी भी प्रकार का मांगलिक कार्य नहीं होता है, यथा विवाह संस्कार, ब्रह्मसूत्र धारण संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार इत्यादि इत्यादि। ऐसा माना जाता है कि होलिका दहन से सात दिन पूर्व से होलिका दहन तक विष्णु भक्त प्रहलाद को उसके पिता हिरण्यकश्यपु द्वारा भगवान विष्णु की भक्ति नहीं करने की आज्ञा दी, जिसको भक्त प्रहलाद ने नहीं माना तो उसको अनेक प्रकार की यातनाएँ दी गई और आठवें दिन अपनी बहन होलिका जिसको अग्नि स्नान का वरदान प्राप्त था और उस अग्नि स्नान में वह नहीं जलती थी, उसके साथ विष्णुभक्त प्रहलाद को अग्नि में बैठाकर यातना दी गई, परन्तु हिरण्यकश्यपु ने जैसा सोचा था वैसा नही हुआ बल्कि इसका विपरीत प्रभाव पड़ा और भक्त प्रहलाद अग्नि में तपकर अपने अन्दर और तेज लेकर बाहर निकला और हिरण्यकष्यपु की बहन जिसे अग्निस्नान का वरदान प्राप्त था वह उस अग्नि में जलकर राख हो गई। इसीलिए भक्त प्रहलाद को आठ दिनों तक इस प्रकार की यातनाएँ देने के कारण इन आठ दिनों में किसी भी

प्रकार का शुभ कार्य सम्पादित नहीं किया जाता है।

इसके पश्चात होलिका दहन के दिन यानी फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल प्रत्येक मोहल्ले के युवा एकत्रित होकर होलिका दहन के स्थान की साफ सफाई करते हैं और रोपी हुई होलिका के चारोंओर गुलाल से रंगोली बनाते हैं। साथ ही कुछ युवा पूरे मोहल्ले के निवासियों को निश्चित समय पर आने का न्योता देते हैं। मोहल्ले के सभी निवासी निश्चित स्थान एवं निश्चित समय पर अपने अपने घर से अपने साथ खाण्डे (गेरु लगी पतली लकड़ियाँ, जो जन्दोट्यों पेड़ की होती है) लेकर आते हैं और होलिका के चारोंओर रखते हैं। इसके पश्चात मुहूर्त अनुसार निश्चित समय पर पंडितजी के सान्निध्य में होली का दहन किया जाता है।

होलिका दहन के पश्चात सभी जन नई फसल जैसे गेहूँ, जौ, चना इत्यादि को होली की अग्नि में सेंकते हैं और अपने घर में वर्षभर अनाज भरा रहे ऐसी कामना करते हैं। साथ ही जिनके घर में वर्षभर के भीतर जन्म लेने वाले शिशु होते हैं उनको अच्छे से तैयार कर उनके सिर पर फूलों से बना मुकुट लगाया जाता है तथा शिशु का मामा शिशु को गोद में लेकर जलती हुई होली की सात परिक्रमा करता है। सात परिक्रमा के बारे में रीति रिवाज और परम्पराओं की सिद्धहस्त समाजरत्न श्रीमती शकुन्तला व्यास बताती थी कि होलिका दहन से सात दिन पूर्व विष्णुभक्त प्रहलाद को जिस प्रकार यातनाएँ दी गई थी वैसी यातनाएँ एवं किसी भी प्रकार की बाधाएँ शिशु पर नहीं आए और इन परिक्रमाओं से उसका निराकरण हो जाए इसलिए शिशु को गोद में लेकर उसका मामा जलती हुई होली की अग्नि के साथ परिक्रमा करता है, जिससे उस पर किसी भी प्रकार की बाधाओं का असर न हो। वह बताती थी कि पूर्व में बच्चे का मामा बच्चे को लेकर सात स्थानों पर जाकर जलती हुई होली की परिक्रमा करता था, परन्तु वर्तमान में एक स्थान पर ही होली की सात परिक्रमा कर पूर्ति कर दी जाती है।

इस होली रूपी बुराई को जलाकर राख कर दिया है और यह बुराई पर अच्छाई की जीत है। इसलिए सम्पूर्ण क्रिया के बाद सभी जन एक दूसरे को होली की बधाई देते हैं और एक दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। इसके पश्चात सभी बालक, युवा, नर, नारी और वृद्ध जन अपने-अपने निवास चले जाते हैं।

दूसरे दिन धुलहरी या धुलण्डी या छारेण्डी का आयोजन होता है। इसमें सभी समाजजन एवं मित्र एकत्रित होकर मन्दिर में ईश्वर को अबीर और गुलाल खिलाने के बाद ईष्ट मित्रों संग होली खेलते हैं। उसके बाद गत वर्ष होली के बाद समाज के किसी परिवार में मृत्यु हुई है और वह परिवार शोकग्रस्त है उस शोकसंतप्त परिवार में जाकर शोक निवारण करवाते हैं। उसके बाद समाज के जिस घर में वर्षभर में भीतर किसी शिशु का जन्म हुआ है, वहाँ जाते हैं एवं राग और रंग का आनन्द लेते हैं। साथ ही चांग, ढफ, ढोलक, मृदंग, झांझ, मंजिरे बजाते हुए फाग गाते हैं। शिशु को मध्य में बिठाकर उसके सिर के ऊपर खाण्डे (गेरु लगी पतली लकड़ियाँ, जो जन्दोट्यो पेड़ की होती हैं) को एक खाण्डे दूसरे खाण्डे से टकाराते हैं तब समाज के पण्डित द्वारा मन्त्रोचार किया जाता है। इस क्रिया को ढूंढना कहते हैं।

ढूंढने के बारे में कहा जाता है कि प्राचीनकाल में ढूंढा नाम की एक राक्षसी थी, जो विशेष रूप से बच्चों को डराती और अपने साथ उठा ले जाती थी। वह राक्षसी केवल लकड़ी की तलवार से ही डरती थी। इसको देखते हुए वरिष्ठजनों ने बच्चों के हाथों में लकड़ी के तलवारें देकर हो-हल्ला करना शुरू किया, जिससे वह राक्षसी भाग गई। इस परम्परा में बालक को ढूंढ़ा जाता है, जिससे वह ढूंढी राक्षसी किसी भी रूप में यहाँ हो तो भाग जाए। इसीलिए उस लकड़ी को खाण्डा कहा जाता है। खाण्डा का मूल शब्द खड़ग है, जो धीरे-धीरे अपभ्रंश होकर खाण्डा हो गया है। खड़ग का अर्थ तलवार से है।

इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है, जहाँ वर्षभर में शिशु का जन्म का हुआ है। जब समाजजन उस परिवार में बालक को ढूंढने के लिए आते हैं तो उस परिवार द्वारा आगन्तुक महमानों को कुछ अल्पाहार कराया जाता है। कुछ स्थानों पर भांग और ठंडाई की व्यवस्था भी की जाती है, परन्तु आजकल यह परम्परा सामूहिक रूप से होने लगी है। इसके तहत समाज के सभी लोग समाज के भवन में एकत्रित होकर इसका आयोजन करते हैं और इस राग और रंग के त्योहार का आनन्द लेते हुए अन्त में पुनः अपने निवास चले जाते हैं।

होली के हितोपदेश

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर :

सात गधों का गाड़ा खींचे, कविता कथा और नाटक।
लिखे जारहा रामभरोसे, खोज रहा हूं अब पाठक।।
व्हील चेयर पर डोलता, अब कहां मिष्ठान्न?
बीमारी ने छिन लिए, सारे ही पकवान।।
कभी जहां हिरना हरिन मगरी रास रचायो।
वहां जाय राजेन्द्र ने अपनो वास बनायो।।
खूब रच्यो ,शत शत छप्यो कथा लोक में छायो।
विधि के आगे हार गयो अब व्हीलचेयर पर आयो।।
सृजनतीर्थ अपनो नटनागर भटनागर कहलायो।।

डॉ. शिवसिंह सारंगदेवोत :

सहयोगी की शक्तिवंत है पीठ यदि बढ़ते जाओ।
बनी रहे शिवकृपा ज्ञान का अंक लिए चढ़ते जाओ।।
विद्या का वैभव भव-भव तक करे उजाला।
रंग हजारों लगे खोलदे घर-घर ताला।।

कैलाश मानव :

दिव्यांगों की सेवा सबसे कठिन कर्म है।
इससे बढ़कर और न कोई श्रेष्ठ धर्म है।।
भाग्यवान वो जल के बिना जलज खिलते हैं।
अच्छे कर्म किये सो अच्छे फल मिलते हैं।।

डॉ. महेन्द्र भानावत :

सत्यासी में चल रहे लगे ठाठ के बाट।
कइयों की करते रहे खड़ी खाट बे खाट।।
किन्तु लेखनी में अभी लोहा है परवान।
कागज पर खिलते कमल आखर-आखर जान।।
फागुन आयो री सखी भाणावत बैचेन।
दौहा लिखने में लगे दिन कटते नहीं रेन।।
नन्द गए भगवती गए सूनी फतेहपुरा की नाल।
कृष्णपुरा वृन्दावन जैसो कभी उत नाचे बहुत ग्वाल।।
दूरभाष की दुनिया में किशन बसे बहुत दूर।
मित्र बिना सुन री सखी अपनी होरी चकनाचूर।।

दुलाराम सहारण :

आये थे निष्प्राण थी, गये हुई निष्प्राण।
यह क्या जादू कर गये, भटक रहे धीमान।।
वे भंवरे मधुमक्खियां शोभा थे श्रीमान।
ना गूंजे भिनभिन करे, हवा हुई हैरान।।

क़मर मेवाड़ी :

छांट रहा हूं पत्र दोस्तों के जो भी आये थप्पी।
देख रहा पिछला जीवन रंगीन मिजाजी की चप्पी।।
बचा नहीं कुछ निचुड़ गया है रस नींबुड़ा का शोधन।
यारबाज भी चले गये यारी सम्बोधन का रोदन।।

डॉ. देव कोठारी :

देव कृपा जैसी रही, बनी रहे पूरजोर।
जो सोचो करते रहो, कोई कसर न कोर।।
जितना बोझा उठा सको, रहो उठाते यार।
साहित्य की तुलना में, समझो राजनीति को भार।।

किशन दाधीच :

अकादमी भी गई लेगई सन की दाढ़ी जो पहने।
शोभित होते हैं सदस्य भी जैसे अंग-अंग गहने।।
खूंटी पे लटकी रहती है यार अंगरखी मेरी।
जैसे बिन मौसम ही कोई रस देती है केरी।।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' :

वे जुगनू अब बनगये सज्जन सूर्यप्रकाश।
पुरातत्व इतिहास के वेत्ता खासमखास।।
वेद पुराण प्रकांड हैं ऋषिकुल लूंठे अंग।
होली पर मलमल लगे धरती के सब रंग।।

श्री कृष्ण शर्मा :

सृजकधरों की सभी तरह की खबरों के संवाहक।
सबके स्नेहिल यारबाज हैं स्वयं गुणी गुण ग्राहक।।
अस्सी ऊपर हंसी ठिठोली का आनंद अनूठा।
मित्र मंडली मजेदार है कोई न छातीकूटा।।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

उदयपुर के वासी और मुंबई के बने प्रवासी।
पता नहीं कहां जुड़ती है बैठक अच्छी खासी।।
अकादमी जब से छूटी है, छूट गये वारे न्यारे।
रात चमकने बंद होगये, दिन में दिखते तारे।।
व्यंग्य रच्यो कविता सुनी, कथा को खूब करयो पारायण।
साहित्य पथ एसो चुन्यो, लक्ष्मी मिली न नारायण।।

डॉ. भगवतीलाल व्यास :

छूट गई सिगरेट अचानक आई बीड़ी।
जैसे सागर की लहरों पर कोई कीड़ी।।
भटक गये पथ लटक गई झोली पाजामा।
सहज गये बैकुंठ छोड़ सबको बेनामा।।

माधव नागदा :

लाल मादड़ी दड़ा खेलते।
बिन घोड़ी ही पड़ा खेलते।।
गदा दिखाकर नाग भगाता।
धाक बिना ही धाक जमाता।।

डॉ. दिलीप धींग :

तुम बटोरते जहां कहीं भी सम्मानों के खरपतवार।
जैसे बिन पट्टे दुपट्टे लीर-लीर लटकन बेतार।।
धींगाणे ही धींगामस्ती की टन-टन टोकर बजती।
प्राकृत का प्रभाव खाक से रत्नों की दुकान सजती।।

डॉ. ज्योतिपुंज :

ज्योति कलश अब धीरे-धीरे छलक रहा है।
युगधारा की लहरों पर ही खलक रहा है।।
वाणी का आकाश थम गया केजुअल पर।
कंधे पर हस्ताड़ा डाले डोलरहा घर।।

डॉ. इकबाल सागर :

हर महफिल में शेरोशायरी के अद्भुत रंग भरते।
भरतमिलाप यारबाजी के चलते रस्ते करते।।
सबकी लेते खबर इन दिनों कुछ बेखबर हुए हैं।
किन्तु नहीं बेढ़ब बेताला हमसे विमुख हुए हैं।।

डॉ. इंद्रप्रकाश श्रीमाली

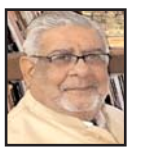

कभी तरंग ध्वनि की गति सूं नाप लियो आकाश।
वाणी की सम्मोहक मति सूं खूब रचायो रास।।
प्रेम पथिक तन से व्यथित पर मन से हैं बिंदास।
मंद मंद बहता मलयानिल छन छन इंद्र प्रकाश।।

शैलेष व्यास :

शिवशंकर कैलाश बिराजे ध्यान मग्न हैं।
पता नहीं किसके सगपण और शेष लग्न हैं।।

भूपेन्द्र चौबीसा :

बैल गाड़ी को करदी हमने बकरा गाड़ी।
जैसे खुद सलवार हो गई अच्छी साड़ी।।

डॉ. तुक्तक भानावत :

पार्श्वकल्ला में बैठक जुड़ती पत्रकार आते जाते।
गपशप करते नई पुरानी खबरें लाते सुख पाते।।
छोटी-मोटी संगोष्ठी साहित्य संस्कृति कलाकर्म।
और राजनीति की जुड़ती रहती बैठक हरदम।।

प्रस्तुति - डॉ. तुक्तक भानावत
संप्रति संस्थान के सौजन्य से

बुरा न मानो होली है

(1)
बुरा न मानो, बुरा न सोचो, बुरा न समझो होली है।
परंपरा है सुघड़ सुहानी, जीवन-रस की गोली है।।
होली है दुष्कर्म जलाने की, पवित्र मन पाने की।
हंसी मसखरी शब्द रंग स्वर रस रोली की होली है।।

(2)
बदमाशों का करदो यारों होली पर मुंह काला।
सरे आम उनको पहनादो सौ जूतों की माला।।
जगह-जगह भ्रष्टाचारी बेबाक घूमते दिखे कहीं।
बेनकाब बुलडोजर करदो साफ सफाई तुरत वहीं।।

(3)
तुकबंदी कोई करो बन जाएगा बंध।
होली पर जो भी रचो हो जाएगा छंद।।
भांग धतूरा छोड़ राग रंग में आ जाओ।
कुल्हड़ में हुल्हड़ भर करके धूम मचाओ।।

(4)
स्वागत करो रंग बरसाने जो भी आये।
पेड़ी पर चंग के ठेके दे शुभ मन गाये।।
कौन मनुज ऐसा जो होली नहीं खेलता।
नाच गान मन के उमाव पर दंड पेलता।।

दो कहकहे

(1)
स्वयं कांपती आई सर्दी ओढ़े चार रजाई।
सूरज दादा नहीं उठे हैं धुंधलके की छांई।।
जली सिगड़ियां किटकिट करती दांत नहीं मुंह खाले।
ऊपर से मावट की आहट बम गोले से ओले।।
क्या बांचूं मैं बही हकीकत मुंह से मुंह नहीं दीखे।
किन्तु भागने सर्दी कोई रामदेव से सीखे।।

(2)
आश्वासनों और घोषणाओं के हुए घर्षण पुराने।
कौन अपने और दूजे करदिये चौपट खजाने।।
जानते थे जीत का सेहरा नहीं हम बांध लेंगे।
किन्तु नकली मुस्कराहट का मजा भी चाख लेंगे।।
मरण से भी अधिक मुश्किल कुर्सियों का छोड़ना है।
अंधियों की दौड़ में भी बेवजह का दौड़ना है।।

जंवाईराज के ठाठ

घटना 1975 के जुलाई माह की है। मैं क़मर मेवाड़ी के बुलावे पर एक साहित्यिक संगोष्ठी में भाग लेने कांकरोली गया था। समय चुराकर मैं वहां रह रहे अपने दूर के समधीजी से मिलने गया। पहलीबार उन वृद्ध दम्पत्ति ने अचानक मुझे देख जो उल्लसित आत्मीयता व्यक्त की, वह कल्पनातीत थी।

जब मैं लौटने लगा तो उनकी भोजन की मनुहार ऐसी थी कि नहीं चाहते हुए भी मैं मना नहीं कर सका। उनका घर गुप्प अन्धेरा लिए था। ब्याणजी साहिबा तो वैसे भी घूंघट में थीं जो जंवाईराज की दृष्टि से ओझल ही रहीं।

एक कलात्मक बाजोट पर भोजन का थाल परोसा गया। गरम-गरम चावल पर बड़ी मनुहार से चार-पांच पली गरम घी उड़ेला गया और ऊपर से चार चिमटी शक्कर। ब्याईजी पास में पंखा झालते बैठ गए। मुझे तब अपने ससुराल में किये गये पहलीबार के भोजन की याद आ गई जैसे बत्तीसी भोजन और तैंतीसी तरकारियों के ठाठ से नवोढ़ा जंवाई को लाड़ से भोजन कराया जा रहा है।

चावल-घी-शक्कर को एकमेक करते समय मुझे लगा कि चावल के साथ उसमें पड़े कीड़े भी मेरे भोजन की शोभा बढ़ा रहे हैं। यह देख मेरी स्थिति सांप-छछून्दर सी हो गई लेकिन भोजन नहीं करने की स्थिति क्लेशमय होने की आशंका से मैं कट्ठा मन कर वह भोजन कर गया। विदा के वक्त कुंकुम का तिलक कर दस्तूर के मुताबिक ग्यारह रूपया नारियल पाकर मैं हर्षित ही था। **-म.भा.**

निहार शांति पाठशाना फनवाला को लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। निहार नैचुरल्स शांति बादाम आंवला ने एक गैर-लाभकारी संगठन लीपफॉरवर्ड के साथ साझेदारी की है और एक अंग्रेजी भाषा दक्षता प्रोग्राम निहार शांति पाठशाना फनवाला को लॉन्च किया है। इस प्रोग्राम में शिक्षकों को उनकी मातृभाषा में शिक्षित करने के लिये फोनेटिक्स का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि उन्हें आसानी से अंग्रेजी पढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। यह प्रोग्राम व्हाट्सएप्प और यूट्यूब पर उपलब्ध है, ताकि भारत के विभिन्न प्रांतों में इसकी पहुंच को बढ़ाया जा सके और अंग्रेजी भाषा को सभी के लिये सुलभ बनाया जा सके।

सोमाश्री बोस अवस्थी, चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, मैरिको लि. ने कहा कि निहार नैचुरल्स शांति बादाम आंवला हेयर ऑयल ने ब्रांड के उद्देश्य को पहचानने वाले ग्राहकों के साथ जो जुड़ाव बनाया है, उस पर हमें बहुत गर्व है। वर्ष 2019 में, निहार शांति पाठशाला फनवाला की शुरूआत ग्रामीण क्षेत्रों में स्टूडेंट्स के बीच पढ़ने एवं समझने की काबिलियित को विकसित करने के प्रारंभिक उद्देश्य के साथ की गई थी। हमने अपने अनूठे इंग्लिश लिट्रेसी प्रोग्राम की पेशकश के साथ इस उद्देश्य को पूरा किया। यह शिक्षकों को एक ऐसी भाषा में साक्षरता को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है, जो उच्च शिक्षा के बेहतर अवसरों के द्वार खोलती है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव को देखना वाकई में संतोषप्रद रहा है। अकेले 2023 में, ब्रांड ने 1.4 लाख सरकारी स्कूलों के साथ साझेदारी की और 2 लाख शिक्षकों को सफलतापूर्वक शिक्षित किया। इस तरह इससे भारत के हिंदी भाषी राज्यों के 142 जिलों में 10 लाख से ज्यादा विद्यार्थी सकारात्मक रूप से प्रभावित हुये हैं। राजस्थान में, प्रोग्राम को 130 से अधिक क्षेत्रीय स्कूलों में सक्रिय किया गया है और 200 से ज्यादा टीचर्स 1000 से अधिक स्टूडेंट्स को अंग्रेजी पढ़ा रहे हैं।

प्रणिल नायक, संस्थापक, लीपफॉरवर्ड ने कहा कि निहार शांति पाठशाला फनवाला प्रोग्राम बच्चों की शिक्षा के माध्यम से प्रगति के लिये निरंतर प्रयास करने के एक साझा लक्ष्य का परिणाम है। निहार नैचुरल्स शांति बादाम आंवला हेयर ऑयल ने हमारी पहुंच को 1 राज्य में 1 जिले से बढ़ाकर भारत के 140 जिलों तक कर दिया है। हमारे अस्तित्व का उद्देश्य इस प्रोग्राम की गुणवत्ता में निहित है, जो बच्चों को उच्च शिक्षा के लिये सक्षम बनाने में नजर आता है। इस प्रोग्राम ने शिक्षकों को न सिर्फ अंग्रेजी भाषा का कौशल सिखाया, बल्कि सामाजिक दायरे से बाहर निकलने और अपने लिये विकास के नये अवसर बनाने में भी उन्हें सक्षम बनाया है।

बाजार / समाचार

हर्षराजसिंह को भामाशाह सम्मान

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के 03 मार्च को आयोजित 40वें सम्मान समर्पण समारोह में डॉ. महेन्द्र-अनिता राणावत के पुत्र हर्षराजसिंह (हनी) को ललित कला में स्नातक पर भामाशाह सम्मान प्रदान किया गया।

'फीटल रेडियोलॉजी में रीसेंट अपडेट' पर सीएमई आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी एंड पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) ने 'फीटल रेडियोलॉजी में रीसेंट अपडेट' पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक सीएमई का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नवीनतम प्रगति की जानकारी प्राप्त करने चिकित्सकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम उमरड़ा स्थित पिम्स हॉस्पिटल के रेडियोडायग्नोसिस विभाग में आयोजित किया गया।

पिम्स हॉस्पिटल के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने सभी को शुभकामनाएं दी। राजस्थान स्टेट रेडियोलॉजी एंड उदयपुर चैप्टर ऑफ रेडियोलॉजी के प्रेसिडेंट डॉ. आनंद गुप्ता ने कहा कि इस तरह की कॉन्फ्रेंसेस से निरंतर सीखने का

अवसर प्रदान करने की प्रेरणा मिलती है। ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री प्रोफेसर डॉ. हरीराम ने कहा कि प्रतिभागियों की उपस्थिति और सकारात्मक प्रतिक्रिया से खुश हैं। यूकोर के सचिव डॉ. कुशल गहलोत ने प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। कॉन्फ्रेंस को मेजर डॉ. आशीष चौधरी, डॉ. गुलाब छाजेड, डॉ. शकुंतला गोदारा, डॉ. हरीराम एवं डॉ. राजाराम शर्मा ने संबोधित किया।

इस अवसर पर यूकोर के पैटर्न डॉ. एनसी शर्मा, गीतांजलि हॉस्पिटल के रेडियोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र कुंडू, पेसिफिक हॉस्पिटल के विभागाध्यक्ष डॉ. कपिल व्यास, अमेरिकन हॉस्पिटल के विभागाध्यक्ष डॉ. रामबीरसिंह, अनंता हॉस्पिटल की विभागाध्यक्ष डॉ. रितु मेहता, पिम्स हॉस्पिटल से डॉ. सौरभ गोयल, डॉ. सुनील कास्ट, तपेंद्र तिवारी व समस्त रेजीडेंट डॉक्टर्स ने भाग लिया। कॉन्फ्रेंस का आयोजन जयप्रकाश त्यागी एवं टीम ने सफलतापूर्वक किया।

अक्षयकुमार का रैडिसन ब्लू पैलेस रिसॉर्ट एंड स्पा में स्वागत

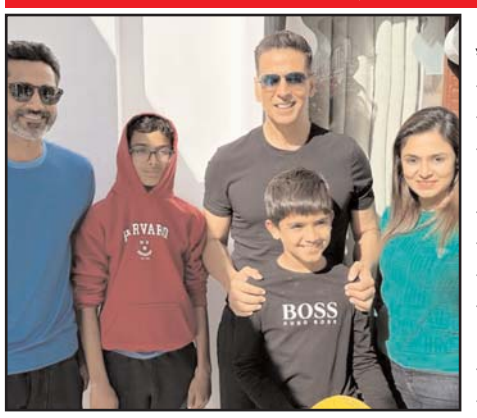

उदयपुर (ह. सं.)। रैडिसन ब्लू पैलेस रिसॉर्ट ऐंड स्पा, उदयपुर ने बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षयकुमार का स्वागत किया। अक्षय कुमार अपनी आगामी फिल्म खेल खेल में की शूटिंग के लिए यहाँ आये हैं। अन्य कलाकारों में तापसी पन्नू, वाणी कपूर, फरदीन खान, आदित्य सील और किरण कुमार शामिल हैं। वे इस पैलेस में फिल्म के कुछ महत्वपूर्ण सीन्स की शूटिंग के लिए आए हैं। इन सीन्स के लिए प्राकृतिक छटाओं से भरपूर भूदृश्य और राजशाही तथा आधुनिक इंटीरियर तथा प्रकृति की सुन्दरता के सही संतुलन वाली पृष्ठभूमि की ज़रुरत थी, जो यहाँ उपलब्ध है।

रैडिसन ब्लू पैलेस रिसॉर्ट ऐंड स्पा, उदयपुर के चेयरमैन और एमडी सोमेश अग्रवाल ने कहा कि यह टीम फिल्म के महत्वपूर्ण हिस्से की शूटिंग के लिए यहाँ आई है और हम उन्हें सभी संभव तरीके से सपोर्ट कर रहे हैं। बेमिसाल हॉस्पिटैलिटी, लग्जरी सुविधायें, और आरामदेह स्टे प्रदान करने के प्रति अपनी वचनबद्धता पर खरा उतरते हुए, हम सेलिब्रिटीज और क्रू की सभी विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा कर रहे हैं और उन्हें यादगार अनुभव देने की कोशिश कर रहे हैं।

इंदिरा आईवीएफ में प्रजनन स्वास्थ्य पाठ्यक्रम शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। इंदिरा आईवीएफ ने प्रजनन चिकित्सा पाठ्यक्रम को भारत सरकार के नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन (एनबीई) द्वारा प्रतिष्ठित फेलोशिप ऑफ नेशनल बोर्ड (एफएनबी) की ओर से मान्यता प्राप्त होने की घोषणा की। इसके तहत उदयपुर और पुणे के अस्पतालों को क्रमशः चार और दो सीटों की मान्यता प्रदान की गई है। कंपनी अगले पांच वर्षों में 100 एफएनबी उम्मीदवारों को प्रशिक्षित करने का इरादा रखती है, जिससे देश में प्रशिक्षित प्रजनन विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण आवश्यकता के अंतर को दूर किया जा सके।

इंदिरा आईवीएफ के प्रबंध निदेशक नितिज़ मुर्डिया ने कहा कि मेडिकल स्नातक, जिनके पास प्रसूति एवं स्त्री रोग में डीएनबी/एमएस की डिग्री है, वे इस योग्यता परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। कुछ चयनित स्नातकों को एनबीई-मान्यता प्राप्त मेडिकल कॉलेजों, संस्थानों या अस्पतालों में सीटें आवंटित की जाएंगी।

नेशनल बोर्ड की फ़ेलोशिप - प्रजनन चिकित्सा पाठ्यक्रम को व्यापक पाठ्यक्रमों और कठोर प्रशिक्षण प्रोटोकॉल के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, जो यह सुनिश्चित करता है कि प्रजनन चिकित्सा के क्षेत्र में पेशेवर विशेषज्ञों को उनकी क्षमता के अनुरूप उच्चतम मानकों का पालन करने में सहयोग कर सके। दो साल की फेलोशिप के दौरान, चयनित उम्मीदवारों को सैद्धांतिक (थियोरेटिकल), नैदानिक (क्लीनिकल), व्यावहारिक (प्रैक्टिकल) और संगोष्ठी प्रारूपों में विभाजित एक कठोर पाठ्यक्रम से गुजरना होगा, जो उन्हें ज्ञान, कौशल, व्यवहार, पुनर्वास देखभाल की डिलीवरी और अनुसंधान और प्रशिक्षण की पद्धति से परिचित कराता है।

यह दिल मांगे मोर कैम्पेन लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। पेप्सी ने भारत में अपने 125वें जन्मदिन के मौके पर शानदार जश्न मनाते हुए भविष्य को नए सिरे से परिभाषित करने की तैयारी पूरी कर ली है। पेप्सी ने अपने नए ब्रैंड कैम्पेन 'यह दिल मांगे मोर' भी लॉन्च किया है जो पूरे देशभर में तूफान बरपा देगा। इस नए कैम्पेन में आकर्षक और प्रतिभाशाली ब्रैंड एंबैसडर रणवीरसिंह दिखायी दे रहे हैं।

शैलजा जोशी, कैटेगरी लीड, पेप्सी कोला, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि यह दिल मांगे मोर महज़ कैम्पेन नहीं है, यह पेप्सी को पसंद करने वालों के दिलों पर खुदा हुआ ध्येय वाक्य है। रणवीरसिंह एकदम परफैक्ट एंबैसडर हैं और इस आइकॉनिक कैम्पेन के जरिए हम भारत के साथ अपने जुड़ाव का जश्न मना रहे हैं और साथ ही, 'कुछ और' की टाइमलैस चाहत को भी बढ़ावा देते हैं। 'यह दिल मांगे मोर' के जरिए हमारा मकसद भारत के उन युवाओं को सम्मानित करना है जो अधिक महत्वाकांक्षाओं के लिए हमेशा प्रयासरत रहते हैं, और हम उन्हें अपने दिलों की ख्वाहिशों तथा आकांक्षाओं को सुनने के लिए उकसाते हैं।

जेके टायर आईसीसी सोशल इम्पैक्ट अवॉर्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज को कोलकाता में आयोजित छठे इण्डियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) सोशल इम्पैक्ट अवॉर्ड्स-2024 में जल संरक्षण प्रयासों के लिए अवॉर्ड देकर सम्मानित किया गया। ज्यूरी ने स्वच्छ जल और स्वच्छता श्रेणी में, जेके टायर की जल संरक्षण परियोजना को निर्विवाद विजेता के रूप पाया। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डॉ. सी.वी. आनन्द बोस ने यह अवॉर्ड जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज

के प्रमुख आई आर एवं सीएसआर बी.एस. डागर को प्रदान किया। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज के चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि सीएसआर पहल के एक हिस्से के रूप में, जेके टायर ने अपनी निर्माण इकाइयों से सटे गांवों में कई जल संरक्षण पहल शुरू की है, जिससे स्थानीय लोगों को जल आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाया गया है। कम्पनी ने पिछले पांच वर्षों में सफलतापूर्वक 100 से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया, जिससे समुदाय के उपभोग के लिए अधिक जल स्रोत उपलब्ध हुए।

डॉ. नागर को सीग्निफिकेंट अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के संघटक माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी सांयकालीन महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं डिपार्टमेंट ऑफ रिहेबिलिटेशन साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ. सत्यभूषण नागर को फिजियोथेरेपी एवं पुनर्वास के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपिष्ट द्वारा देहरादून में आयोजित वार्षिक राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में सीग्निफिकेंट अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह थे। उत्तराखंड मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी ने वर्चुअली भाग लिया। अध्यक्षता आई.ए.पी के नेशनल प्रेसीडेंट डॉ. संजीव झा ने की। पूर्व इंडियन क्रिकेट टीम के फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. अली ईरानी, जर्नल सेकेट्री डॉ. अन्नामलाई, डॉ. मनीष अरोड़ा एवं देश विदेश के करीबन 2500 से अधिक फिजियोथेरेपिष्ट शामिल हुये। डॉ. नागर ने कांफ्रेंस में शोधपत्र का वाचन किया। वे पैरामेडिकल कौंसिल राजस्थान सरकार के सदस्य रहे हैं।

डॉ. कर्नाटक को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षाविद् सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीतकुमार कर्नाटक को गीता विश्वविद्यालय, पानीपत में प्लान्टिका, पादप विज्ञान अनुसंधानकर्ता

संघ, देहरादून द्वारा आयोजित छठी पादप विज्ञान शोधकर्ताओं की बैठक में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षाविद् सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. कर्नाटक को यह सम्मान शिक्षण और अनुसन्धान को बढ़ावा देने में उनके कर्मनिष्ठ प्रयासों के लिए प्रदान किया गया। समारोह में वहां के कुलाधिपति एस. पी. बंसल, प्रो-चांसलर अंकुश बंसल व प्रो. गुलशन चैहान, प्लान्टिका के अध्यक्ष डॉ. अनूप बदोनी सहित 350 के अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक, प्रसार अधिकारी, उद्यमी एवं उद्योगकर्मी उपस्थित थे।

जिंक स्मेल्टर में 53वां सुरक्षा सप्ताह सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। हम सभी सुरक्षा के बारे में भलीभांती जानते व समझते है लेकिन उसे अमल में लाना जरूरी है, निजी जीवन में सुरक्षा के प्रति जानकारी एवं समझ से ही हम स्वयं एवं परिवार को सुरक्षित रख सकते है। यह बात उपमुख्य निरीक्षक कारखाना एवं बॉयलर पवनकुमार गोयल ने जिंक स्मेल्टर देबारी में 53वें राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कही। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के प्रति लापरवाही हमें मुश्किल में डाल सकती है, हम सभी को दुर्घटनाओं से बचाव के लिये सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूकता के प्रति प्रतिबद्ध रहना होगा।

ज़िंक स्मेल्टर देबारी के एसबीयू डायरेक्टर मानस त्यागी ने कहा कि किसी भी कार्य को करने से पहले हम उस कार्य को करने के सुरक्षित तरीकों के बारे में सोचा जाएं तो शून्य दूर्घटना और शून्य क्षति के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। वरिष्ठ सचिव मजदूर संघ प्रकाश श्रीमाल ने उपस्थित कर्मचारियों एंव अधिकारियों से सुरक्षा के प्रति किसी भी तरह की लापरवाही नहीं बरतने की अपील की।

ठिठोली आलम और शेख की

होली की इस मस्त ठिठोली में नन्दबाबू ने आलम और शेख का एक मजेदार किस्सा सुनाया। आलम उत्तरप्रदेश के किसी गांव के कवि थे। आलम होने से पूर्व वे ब्राह्मण थे। जिस मोहल्ले में वे रहते थे उसी में शेख नाम की एक रंगरेजन थी। कहते हैं कि वह कवयित्री थी। एकबार कवि आलम ने अपना साफा रंगने के लिए शेख को दिया। इसमें एक छोर पर कुछ चीज बंधी है, ऐसा रंगरेजन शेख को लगा। जिज्ञाशावश उसने उस साफे के पल्लू को खोला। उसमें एक कागज मिला जिस पर दोहे की एक पंक्ति लिखी थी-

कनक छरी सी कामिनी, काहे को कटि छीन।

दोहकी पूर्ति कर उसने फिर उसी सोफे के पल्लू में बांध दिया। बहुत दिनों बाद आलम को उस दोहे की पूर्ति करने का स्मरण आया। उसने जब उस साफे का पल्लू खोला तो उसके हर्ष और आश्चर्य की कोई सीमा न रही कि वह दोहा पूरा कर दिया गया है। पता करने पर उसे विदित हुआ कि रंगरेजन शेख कवयित्री भी हैं और उन्होंने उस एक पंक्ति को इस तरह पूरी कर दोहा बना दिया है। किंवदन्ती के अनुसार बाद में दोनों प्रतिभावान कवि-कवयित्री दाम्पत्य-सूत्र में बंध गये। यही ब्राह्मण कवि आलम नाम से ख्यात हुए।

- म. भा.

एक ही संग दोऊ रिपटे सखि, वे भये ऊपर मैं भई नीचे

होली के फागुनी दिन अराजकतावादी ही होते हैं ; उद्दण्ड और भारतीय जीवन को आध्यात्मिकता के मिथक से दिल्लगी करते। कविगण भी नहीं समझते कि तन-मन को क्या हो गया है। हवाओं को क्या हो गया है। नदियों को क्या हो गया है। कुछ तो हो ही गया है। कुछ और ही तरह से सर-सरिताएं सरस हो गई हैं और भांति सर-सरितान सरसाने लागे और ही तरह से भंवरे कुसुमावलियों के आसपास आने-जाने लगे। पर्वतों के गले में सरिताओं ने भुजायें डाल कर उन्हें सनाथ कर दिया। जयशंकर प्रसाद के शब्दों में-

भुज-लता पड़ी सरिताओं की शैली के गले सनाथ हुए।

मदनोत्सव के ये दिन कवियों के लिए अद्भुत प्रेरणा और आनन्द के दिन हैं। वर्जनाओं और निषेधों की जकड़न सहज और अनायास ही ढीली पड़ जाती है। होली के दिनों में कुछ भी कहो, बुरा नहीं लगेगा। रसिया गीतों में काम-केलि की क्रियाओं का उन्मुक्त वर्णन होगा। चंग, डफ, ढोल, मृदंग नानारूपों में काम-तरंगों को जगायेगा। कविगण संकोच छोड़कर होली की कविताओं में रति-कर्म की सहज क्रीड़ाओं का वर्णन करेंगे- पद्माकर कवि लिखेंगे-

फाग की भीर अबीरन में गहि गोबिन्द भीतर ले गई गोरी।
भाई करी अपनी 'पद्माकर' ऊपर नाय अबीर की झोरी।।
खींच पितम्बर कम्मर तें सुबिदा दई मीड़ कपोलन ऐरी।
नैन नचाय, कहीं मुसकाय लता फेर खेलन आई हो होरी।।

'भाई करने के' क्रम में पीताम्बर खींच लिया जाएगा और फिर किसी भोलेपन से इतराते हुए कहा- पूछा जायेगा होली खेलने फिर आओगे न! इन्हीं दिनों की उन्मुक्तता में होली खेलते प्रसन्न नायक-नायिका फिसल जायेंगे और संयोग शृंगार की रति-मुद्रा बन जायेगी। ठीक ही कहा-

एक ही संग दोऊ रिपटे सखि, वे भये ऊपर मैं भई नीचे।

शुभ विवाह

4 मार्च को लखनऊ में दीपांदी संग आलोक के विवाह समारोह में काव्या मेहता अपने सहपाठियों ऋत्मुकेश, कौस्तुभ, उज्ज्वल और शगुन के साथ।

मनुष्य को बचाये रखने में कविता की अहम भूमिका : मीठेश निर्मोही

जोधपुर । साहित्यकार मीठेश निर्मोही ने 'लेखक से मिलिए' साक्षात्कार में कहा कि कविता हासिए पर चले जाने और मरने के कगार पर है जैसी बातें बेमानी हैं। आज के समय में प्रगतिशील-जनवादी एवं कलावादी विचारधाराओं से जुड़े कवियों की तीनों पीढ़ियां बहुतायत से अच्छी कविताएं रच रही हैं।

डॉ. प्रकाशदान चारण द्वारा लिए गए साक्षात्कार में साहित्य सृजन की प्रेरणा, रचना के परिवेश, कविता के वर्तमान परिदृश्य, उत्तर-आधुनिक विमर्शों, कविता में बिम्ब एवं प्रतीक प्रयोग की आवश्यकता, अनुवाद की स्थिति और महत्ता, राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता जैसे अनेक विषयों से संबंधित प्रश्नों का समावेश था। लगभग दो घंटे तक चले साक्षात्कार में मीठेश निर्मोही ने यह भी कहा कि यह शताब्दी अनुवाद की शताब्दी है। सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समृद्धि के लिए विदेशी भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का योजनाबद्ध रूप से अनुवाद का काम होना चाहिए ।

इस अवसर पर मीठेश निर्मोही ने श्रोताओं के अनुरोध पर राजस्थानी की थार, पूंख, चिडकल, लो सूंपूं हूं थांने, यूं ईज मुलकजे, तथा हिंदी की बूढ़े संस्कार, दंगा और दादी मां, ओ ! मृत्यु, रंग - सुगंध शीर्षक कविताएं पढ़ीं जिन्हें खूब सराहा गया।

माउंटेन ड्यू का समर कैम्पेन

उदयपुर (ह. सं.)। माउंटेन ड्यू ने अपना 2024 का समर कैम्पेन जारी किया है जिसमें बहादुरी की मिसाल पेश करने वाली एक ऐसी कहानी है जो एक दोस्त की जान बचाने के लिए अपने डर को दरकिनार करने का संदेश देती है। माउंटेन ड्यू के ब्रैंड एंबैसडर ऋतिक रोशन हैं जो ब्रैंड की टैगलाइन डर के आगे जीत है के पर्याय बन चुके हैं। माउंटेन ड्यू के असल अंदाज़ को साकार करने वाली इस फिल्म में कई रोमांचकारी स्टंट हैं और साथ ही हैं जोश से भर देने वाली मनोरंजक कहानी।

आकांक्षा दलाल, कैटेगरी हैड, माउंटेन ड्यू, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि हम हमेशा से ऐसे ब्रैंड बने रहे हैं जो साहस का प्रतीक है। हमारी टैगलाइन डर के आगे जीत है भी इसी संदेश को दोहराती है और यह केवल हमारे ब्रैंड पर ही लागू नहीं होती बल्कि भारत जैसे देश के मामले में भी सही है जहां लगातार अपनी सीमाओं को आगे धकेलना ही नया मानक है। इस ब्रैंड का हमेशा से यह मानना रहा है कि डर बेशक, स्वाभाविक होता है, लेकिन यह प्रतिरोध को जन्म देता है, लेकिन वास्तव में, साहस है जो हमें खुद को आजाद करने या 'जीत' के लिए प्रेरित होता है।

कहानी कला और समीक्षा पर सारभूत चर्चा

कोटा। वरिष्ठ कथाकार-समीक्षक विजय जोशी ने एक साक्षात्कार में बोलते हुए कहा कि लेखक की कृति की समीक्षा करते वक्त कई समीक्षक भारतीय संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति के लेखकों के विचारों से तुलना करने लग जाते हैं। यही तुलना अपने परिवेश के लेखक को मार देती है। रचनात्मकता को आधार देने के लिए वट वृक्ष तो बनें परन्तु उसे स्वयं ही सूर्य की किरणों की ओर जाने की प्रेरणा देते रहें। हर पुस्तक में कोई न कोई सच्चाई होती है। नैसर्गिक रूप से लिखी पुस्तक विचारों को स्वयं उद्वेलित करती है।

लेखन, नवाचार और समीक्षा प्रक्रिया के उत्तर में जोशी ने कहा कि साहित्य अपने समय के समाज की अभिव्यक्ति होता है जो आने वाली पीढ़ी का मार्ग तो प्रशस्त कर सकता है पर लेखन की दृष्टि से सामयिक नहीं हो सकता। इस संदर्भ में उन्होंने कई उदाहरण से अपनी बात को पुष्ट करते हुए कहा कि आज समय आ गया है जब हमें साहित्य में नवाचार के लिए नई सोच के साथ लिखना होगा। अंत में लोगों द्वारा उनकी पसंद का गीत सुनाने की गुज़ारिश पर जोशी ने 'रे बंधु तेरा कहाँ मुकाम, भोर हुई जब सूरज निकला छूटा तेरा धाम' सुनाया तो श्रोता गद्गद् हो गए। अथिति के रूप में वरिष्ठ कवि-उपन्यासकार विश्वामित्र दाधीच, डॉ. दीपक श्रीवास्तव मंचासीन ने श्रोताओं को अपने विचारों से लाभान्वित किया।

- प्रस्तुति : डॉ. प्रभातकुमार सिंघल

प्रसंग संस्थान द्वारा स्त्री कथन पर कविगोष्ठी

उदयपुर (ह. सं.)। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में प्रसंग संस्थान की ओर से स्त्री कथन श्रृंखला के अंतर्गत एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में स्त्री चेतना, आज की स्त्री , स्त्री स्वतंत्रता, स्त्रियों के साथ दायित्व बोध,

दोहरे दायित्वों को निभाती स्त्री के अनेक रूप उभर कर सामने आये। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ गीतकार किशन दाधीच ने अपना लोकप्रिय गीत ' मैंने बुना गीत का बाना, उसने गायी एक ग़ज़ल' सुना कर रसविभोर कर दिया। मंजु चतुर्वेदी ने 'वो स्त्री' कविता मैं स्त्री जीवन के विरोधाभास चित्रित करते हुए 'जो ग़लत हैं वो डरेंगे, जो सही हैं वो सामना करेंगे। जैसे होता है दृष्टि का सूर्य से,देह का ताप से' सुनाकर ज़रूरी प्रश्न सामने रखे। आगरा की प्रसिद्ध कवयित्री गोष्ठी में मुख्य अतिथि रही जिन्होंने मां एवं स्त्री विमर्श नामक कविताएं सुनाईं। संस्थान के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कवि, ग़ज़लकार डॉ इन्द्र प्रकाश श्रीमाली ने 'चन्द्रमा बन कर वो मुस्कुराने लगे' ग़ज़ल सुनाई। सुयश चतुर्वेदी ने नंद चतुर्वेदी लिखित कविता किला का पाठ किया। संस्थान के उपाध्यक्ष शिवरतन तिवारी ने कहा कि महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। श्रीमती सीता शर्मा ने महिलाओं के पक्ष में गीत प्रस्तुत किया। संचालन डॉ इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने किया।

गीतांजली में ईएनटी पर कार्यशाला

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ईएनटी विभाग द्वारा पहली नाक व साईनस की एन्डोस्कोपिक सर्जरी व डिसेक्शन कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के कोर्स कोरडिनेटर डॉ. प्रितोष शर्मा ने बताया कि प्रथम चरण में डॉ. नितिन शर्मा व डॉ. अनामिका ने व्याख्यान दिये।

दूसरे चरण में एन्डोस्कोपिक सायन्स सर्जरी की महत्वपूर्ण बातें व बारीकियां डॉ. प्रितोष शर्मा द्वारा सिखाई गई। कोर्स में 15 प्रार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था, जो राजस्थान के अलावा गुजरात व मध्यप्रदेश के ईएनटी सर्जन थे। डॉ. रिद्धीराज ने मंच संचालन व धन्यवाद प्रेषित किया। कार्यशाला में प्रार्थियों ने केडेवर पर नाक व सायनस की एन्डोस्कोपिक सर्जरी सीखी। मेन्टर के रूप में गीतांजली मेडिकल कॉलेज के ईएनटी फेकल्टी के अलावा उदयपुर के समस्त मेडिकल कॉलेज की ईएनटी फेकल्टी मौजूद थी। कार्यशाला को सफल बनाने के लिए एनाटॉमी डिपार्टमेंट का भी पूर्ण योगदान रहा

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं- https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

डॉ. दीनदयान ओझा नहीं रहे

जैसलमेर। वयोवृद्ध सृजन साधक डॉ. दीनदयाजी ओझा का 02 मार्च 2024 को निधन हो गया। सन्

1955 से लेखक के रूप में अन्त तक सक्रिय रहते अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपते-छपाते अन्यों को भी लेखन की ओर प्रेरित करते रहे।

अत्यन्त सादगी एवं सात्विक जीवन जीने वाले नानाश्री ने 27 अक्टूबर 1929 को एक साधारण परिवार में जन्म लेकर राजस्थानी लोकसाहित्य, संस्कृति और जीवनधर्म को अपनी लेखनी से प्राणवंत करते रहे। अनेक अनुसंधुत्सकों ने उनका सान्निध्य प्राप्त कर अपने शोधकर्म को पूरा किया। साहित्य साधना सदन नामक अपने निवास केलापाड़ा के लिए भी वे जाने जाते रहे।

-डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी

हास्य तरंग

शान्ति दादा के सटकारे

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना -

होली आनन्द का पर्व है। धार्मिक मान्यताओं को बगल में रखते हुए इस त्यौहार का मजा आनन्द, हंसी-मजाक के फव्वारे, राग-रंग से मिलनोत्सव के साथ लिया जा सकता है। मित्रों की महफिल हो, पकोड़े, चाय आदि हो, ठहाके गूंजते हों तो यह पर्व मजा दे जाता है। इस समय मुझे शान्ति दादा की बहुत याद आ रही है।

शान्ति दादा बिल्कुल अलग अन्दाज के खुश मिजाज आदमी हैं। आदमियों में नमूना हैं। लम्बे, तगड़े (भगवान बनाये रक्खे) ठहाकेबाज हर फन में माहिर सर्दी में टोपा लगाये पांच आवरणधारी। आप पूछेंगे पांच तो जी हां पांच- बनियान, इनर, कमीज, जर्सी और कोट। कभी-कभी नहीं, अक्सर छठा आवरण पुराना शॉल। पेंट या पजामा पहने मिलेंगे। गर्मी में पजामा या नेकर और बनियान पहिने घर पर या बाहर दोस्तों का इन्तजार करते शान्तिदादा को पायेंगे।

शान्ति दादा से मिलकर आपको खुशी हो या न हो पर उन्हें खुशी मिल जाती है। वे अक्सर कहते मिलेंगे, दोस्त से ही जीवन गतिशील है वरना एक सूनापन रहता है। राय देने में आगे रहते हैं। आप राय मांगो या न मांगो, वे राय जरूर देंगे। रायसाहब, रायचन्द, रायबहादुर कुछ भी कहो पर उनकी पकड़ मगरमच्छ की पकड़ है। मित्रों के लिए वे हर समय तैयार मिलते हैं। बरामदे में ही कुर्सी टेबल लगाकर गली को देखते मिलते हैं।

एक दिन मुझे कहने लगे, 'दोस्तों के बिना तो जानवर भी उदास रहते हैं।' एक किस्सा सुना डाला। एक बन्दर अकेला बोर हो गया। सोचा यह भी कोई जिन्दगी है। न हंसी-मजाक, दौड़भाग भी नहीं। इससे अच्छा मर जाना। पेड़ के नीचे देखा कि एक शेर बैठा हुआ है। बन्दर ने छलांग लगाई और लपक कर शेर की पूंछ खींची। शेर खड़ा हुआ, दहाड़ा और बोला, किसकी मौत आ गई जो ऐसी हरकत करता है। बन्दर सामने आकर बोला, राजन! मैं अकेला हूं। मुझे खा जाओ। मुक्ति मिलेगी। शेर धीरे से बोला, पूंछ खींचते किसी ने देखा तो नहीं, एक बार और खींचों मजा आ रहा है। मैं भी अकेला बोर हो गया हूं। और दोनों ठहाका मारकर हंस दिये। उसके बाद वे दोनों मित्र बन गए।

शान्ति दादा के कुछ फार्मुले हैं। वे कहते हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद दोस्तों की भी कमी हो जाती है। जुगाड़ करना पड़ता है। कभी-कभी दल बदल भी करना पड़ता है। सब चलता है। बच्चों, बच्चियों, बहुओं को फुर्सत नहीं। पोते-पोतियों के स्कूल। घर ट्रेन जैसा लगता है। सुबह बिस्तर से उठो, चाय पियो फिर बाथरूम जाकर नित्यकर्म से निवृत्त हो जाओ फिर आकर बर्थ (बिस्तर) पर बैठ जाओ, अखबार पढ़ लो, विज्ञापनों सहित। फिर खाना खाओ, मोबाइल का भला हो, उसे देख लो, सो जाओ, उठकर चाय पी लो। मोबाइल फिर देख लो, बरामदे में आकर टहल लो, बैठ जाओ। शाम का खाना खाकर सो जाओ बर्थ पर। बिल्कुल ट्रेन जैसी जिन्दगी हो गई है। लम्बी सांस लेते हुए बोले शान्ति दादा।

मैंने दो-चार दिनों से शान्ति दादा को नहीं देखा तो हालचाल जानने उनके घर चला गया। देखा, बिस्तर पर घायल टाईगर ज्यूं पड़े हैं। अरे, इस पहलवान को क्या हो गया? मैंने शान्ति दादा को आवाज दी तो भीष्म पितामह सदृश आंखें खोली और हाय निकल गई। अरे, शान्ति दादा!! यह क्या हाल हो गया। वे बोले, यह सब राय देने का फल है। किस बुरे वक्त राय देने चला था कि अब बिस्तर पर हूं।

मैंने धीरे से पूछा, क्या राय दी? शान्ति दादा ने कहा, पिछले दिनों भानजे की शादी थी। वह घोड़ी पर बैठा था। मैंने सोचा इसे एक-दो राय दे देता हूं ताकि सावधान रहे। जैसे ही घोड़ी के पास गया कि घोड़ी ने लात मार दी। कोशिश बचाव की भी की पर कमर में लगी।

फिर फुलझड़ियां छुटती दिखाई दी और मैं धड़ाम से नीचे। अच्छा हुआ कि पास के नाले में नहीं गिरा नहीं तो जिन्दा नहीं बचता। लड़कों ने तुरन्त अस्पताल ले जाकर दिखाया। अब फ्रेक्चर का इलाज हो रहा है। एक-डेढ़ माह की छुट्टी। अब फूफा-मामा नहीं बनना। न किसी को राय देना। मैंने मन ही मन कहा, रायसाहब कब चुकने वाले हैं। राय तो इनकी हॉबी है। वैसे अफसर के आगे व घोड़ी के पीछे नहीं चलना चाहिए। बड़े-बूढ़े ठीक ही कह गये हैं।

शान्ति दादा के पास किस्सों की भरमार है। राय देने से किस्से मिलते हैं। थैला भरकर किस्से साथ लिए चलते हैं। बुद्धि बड़े काम की चीज है। इसे अलमारी में वक्त-बेवक्त के लिए रख देना चाहिये और राय से काम चलाना चाहिए।

अभी कुछ दिनों पहले की बात है। शान्ति दादा के बायें पैर में प्लास्टर बंधा था। मैंने पूछ लिया, यह क्या हो गया? वे बोले गिर गया था। मेरे से रहा नहीं गया, कैसे गिर गए? वे बोले, यार, तुम बात को घिसते बहुत हो। सुनो! मैंने पत्नी से कहा, इस कमरे का व्हाइट वॉश कराना है। अपन ही कर देते हैं। क्यों खर्च करें मजदूर को बुलाकर। मेरी राय से वह सहमत हो गई।

सीढ़ी लगाकर मैं सफेदी करने चढ़ा, इसी बीच घण्टी बजी। वह सीढ़ी छोड़ मोबाइल की ओर बढ़ी। मैं चिल्लाया- अरे! अरे! यह सीढ़ी फिसल रही है। वह मोबाइल को छोड़ वापस आई पर मैं फर्श पर चित्त पड़ा था। हाय-हाय कर रहा था। वह चिल्लाई, जब सफेदी करना नहीं आता तो यह काम करने की जरूरत क्या थी? मोबाइल को उठाया, वह टूट चुका था। मैं गिर चुका था। अस्पताल ले गये और फिर पन्द्रह दिनों का पलास्टर चढ़ा है। यह राय महंगी पड़ गई।

मैंने शान्ति दादा को ढाढ़स बंधाया। वे बोल, अब आ ही गये हो तो एक-दो किस्से ओर सुन लो। कॉलेज के दिनों की बात है। मेरे मित्र प्रकाश को जयपुर जाना था। हम उसे स्टेशन छोड़ने गये, दो-चार दोस्त थे। प्लेटफॉर्म पर पहुंचे ही थे कि गाड़ी सीटी मार कर रवाना हो गई। मैंने प्रकाश को कहा, दौड़ो, हम भी उसके साथ दौड़े।

जोश में मैं तो गाड़ी में चढ़ गया पर प्रकाश रह गया। सभी डिब्बे में मेरी तारीफ कर रहे थे कि हिम्मत की कीमत है। आपने गाड़ी पकड़ ली। शान्ति दादा बोले, अब उन्हें कैसे बताऊं कि गाड़ी तो प्रकाश को पकड़नी थी पर जोश में हम चढ़ गए। प्रतापनगर स्टेशन पर टीटी से बचते बचाते बाहर आए और ऑटो रिक्शा में बैठकर घर आए। यह जोश होश खोने जैसा था।

शान्ति दादा के पास किस्सों की भरमार है। राय देने से किस्से मिलते हैं। थैला भरकर किस्से साथ लिए चलते हैं। आप पकड़ में आये नहीं कि उनकी पकड़ से छूटेंगे नहीं। उनका कहना है कि बुद्धि बड़े काम की चीज है। इसे अलमारी में वक्त-बेवक्त के लिए रख देना चाहिये और राय से काम चलाना चाहिए।

वे बोले, हेमन्त से मिलने गया। दशहरा था। मुझे देखकर वह बोला, आओ शान्ति दादा, दुर्भाग्य है कि आप आ गये। हमने उसे कहा, दुर्भाग्य नहीं सौभाग्य होता है। वह बोला, हां-हां यही मतलब था। उसकी पत्नी ने हेमन्त से कहा, दशहरा देखने चलते हैं। हेमन्त बोला, अरे! हम कोई छोटे बच्चे हैं कि दशहरा देखने चलें। भाभीजी बोली, दूसरों की पत्नी को बुरी नजर से देखने का क्या परिणाम होता है, यही दिखाना चाहती हूं। इसलिए चलो। शान्ति दादा ने बीच बचाव किया, अरे भाभी! क्यों झगड़ा करती हो, अभी तो दशहरे के पकोड़े खिलाओ।

शान्ति दादा ने कहा, कल एक मित्र की मेरिज एनीवर्सरी पर सन्देश देना था। अंग्रेजी में बड़ी गड़बड़ है। हमने उसे मोबाइल पर सन्देश दिया तो गड़बड़ हो गया। लिखा Happy Marriage Unnecessary हमारे विचार से पहलीबार सही लिखा पर तभी मित्र की फोन पर दहाड़ने की आवाज आई। अबे! शान्ति दादा! मजाक करने को हम ही मिले। अवसर तो देख लेते तो हमें पता चला कि क्या गड़बड़ हो गई है? अब यही देख लो- कल पत्नी ने एक मुहावरे का अर्थ पूछा। सांप की दूम पर पैर रखना। हमने तड़ाक से जवाब दे दिया, पत्नी को पीहर जाने से रोकना। बस वह हमारा मुंह देखती रह गई।

शान्ति दादा ने एक किस्सा सुनाया। यह उनके कॉलेज के समय का था। एक प्रतियोगिता में पूछा गया कि खुशी को तीन शब्दों में प्रकट करो। लोग पुस्तकें देखने लगे। हमने तुरन्त लिख दिया- पत्नी पीहर गई। आयोजकों ने सम्मान करते हुए बैण्ड बाजे के साथ घर पहुंचाया। पत्नी को पता लगा तो उसने घर का दरवाजा भी नहीं खोला, ऐसी रूठ गई। रात भर दरवाजे पर बैठे रहे और बड़ी मुश्किल से उसे समझा कर, विनय पर घर में प्रवेश किया। वायदा किया कि आगे सम्भल कर बोलेंगे।

शान्तिदादा के अनेक किस्से हैं। उनके सटकारे सुन-सुन कर आप आनन्दित हो सकते हैं। सवाल सिर्फ आपकी हिम्मत व समय का है। (अभी तो होली मनाओ)।

नोट : इस तरंग के सभी पात्र एवं स्थान अवास्तवित हैं।

दुर्ग बत्तीसी के संयोजनकार - महाराणा कुंभा

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

दुर्ग या किले अथवा गढ़ किसी राज्य की बड़ी ताकत माने जाते थे। दुर्गों के स्वामी होने से राजा को दुर्गपति कहा जाता था। दुर्गनिवासिनी होने से ही शक्ति को भी दुर्गा कहा गया। दुर्ग बड़ी ताकत होते हैं। चाणक्य से लेकर मनु और राजनीतिक ग्रंथों में दुर्गों की महिमा में सैकड़ों श्लोक मिलते हैं।

महाराणा कुंभा या कुंभकर्ण (शिव के एक नाम पर ही यह नाम रखा गया, शिलालेखों में कुंभा का नाम कलशनृपति भी मिलता है, काल 1433-68 ई.) के काल में लिखे गए अधिकांश वास्तु ग्रंथों में दुर्ग के निर्माण की विधि लिखी गई है। यह उस समय की आवश्यकता थी और उसके जीवनकाल में अमर टांकी चलने की मान्यता इसीलिए है कि तब शिल्पी और कारीगर दिन-रात काम में लगे हुए रहते थे। यूं भी इतिहासकारों का मत है कि कुंभा ने अपने राज्य में 32 दुर्गों का निर्माण करवाया था। मगर, नाम सिर्फ दो-चार ही बता पाते हैं। यथा- कुंभलगढ़, अचलगढ़, चित्तौड़गढ़ और वसंतगढ़।

सच ये है कि कुंभा के समय में मेवाड़-राज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग-बत्तीसी की रचना की गई, अर्थात् राज्य की सीमा पर चारों ही ओर दुर्गों की रचना की जाए। यह कल्पना 'सिंहासन बत्तीसी' की तरह आई हो, यह कहा नहीं जा सकता मगर जैसे 32 दांत जीभ की सुरक्षा करते हैं, वैसे ही किसी राज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग-बत्तीसी को जरूरी समझा गया हो : श्रीमेदपाटे देशं रक्षति यो दुर्गमन्य देशांश्च। तस्य गुणानखिलानपि वक्तुं नालं चतुर्वदन: ।। (एकलिंग माहात्म्य 54)

कुंभा के काल में दुर्गों का जो काम हुआ, वह 32 प्रकार का है जिसका वर्णन दुर्ग बत्तीसी में मिलता है। इनका वर्गीकरण विस्तार, स्थापना तथा

पुनरुद्धार के रूप में वर्णित है जो निम्नांकित रूप में द्रष्टव्य है-

(1) विस्तार कार्य -

इस कार्य के अंतर्गत (1) अपनी जन्मभूमि चित्तौड़गढ़ का कार्य प्रमुख है, जिसमें कुंभा ने न केवल प्रवेश का मार्ग बदला (पूर्व से पश्चिम किया) बल्कि नवीन रथ्याओं या पोलों, द्वारों का कार्य करवाया और सुदृढ़ प्रकार, परिखा का निर्माण भी करवाया जो करीब 90 साल तक बना रहा। इसी प्रकार (2) मांडलगढ़ को विस्तार दिया गया, (3) वसंतगढ़ (आबू) को उत्तर से लेकर पूर्व की ओर बढ़ाया गया मगर चंद्रावती को तब छोड़ दिया गया, (4) अचलगढ़ (आबू) की कोट को किले के रूप में बढ़ाया गया और (5) यही कार्य जालोर में भी हुआ। इसी प्रकार(6) आहोर (जालोड, झाड़ोल) में दुर्ग की रचना को बढ़ाया गया जहां कि पुलस्त्य मुनि का आश्रम था।

(2) स्थापना कार्य -

अपनी रानी कुंभलदेवी के नाम पर (7) कुंभलगढ़ की स्थापना की गई, यह नवीन राजधानी के रूप में कल्पित था, यहां से गोडवाड, मारवाड़, मेरवाड़ा आदि पर नजर रखी जा सकती थी। इसी प्रकार (8) जावर में किला बनाया गया, (9) कोटड़ा-पानरवा, (10) झाड़ोल में नवीन दुर्ग बने। यही नहीं, (11) गोगुंदा के पास घाटे में सेनवाड़ा, (12) बगडूंदा, (13) देसूरी, (14) घाणेराव और (15) मुंडारा में कोट बनवाए गए ताकि उधर से होने वाले हमलों को रोका जा सके और (16) आकोला में सूत्रधार केल्हा की देखरेख में उपयोगी भंडारण के लिए किला बनवाया गया।

(3) पुनरुद्धार कार्य -

कुंभा के काल में (17) धनोप, (18) बनेड़ा, (19) गढ़बोर, (20) सेवंत्री, (21) कोट सोलंकियान, (22) मिरघेरस या मृगेश्वर, (23) राणकपुर के घाटे में भी पुराने किलों का जीर्णोद्धार किया गया। इसी प्रकार (24) उदावट के पास एक कोट का उद्धार हुआ और (25) केलवाड़ा में हमीरसर के पास कोट का जीर्णोद्धार किया, (26) आदिवासियों पर नियंत्रण के लिए देवलिया में कोटड़ी गिराकर नवीन किला बनवाया। ऐसे ही (27) गागरोन का पुनरुद्धार हुआ और (28) नागौर के किले को जलाकर नवीन बनाया गया। (29) एकलिंगजी मंदिर के लिए पिता महाराणा मोकल द्वारा प्रारंभ किए कार्य के तहत किला-परकोटा बनवाकर सुरक्षा दी गई। इस समय इस बस्ती का नाम 'काशिका' रखा गया जो वर्तमान में कैलाशपुरी है।

(4) नवनिरूपण कार्य -

शत्रुओं को भ्रमित करने के लिहाज से (30) चित्तौड़गढ़ के पूर्व की पहाड़ी पर नकली किला बनाया गया, (31) ऐसी ही रचना कैलाशपुरी में त्रिकूट पर्वत के लिए की गई और (32) भैंसरोड़गढ़ को नवीन स्वरुप दिया गया।

कुंभा की यह दुर्ग बत्तीसी आज तक अपनी अहमियत रखती है। पहली बार इन बत्तीस दुर्गों का जिक्र हुआ है, कुंभाकालीन ग्रंथों के संपादन, अनुवाद के लिए किए गए सर्वेक्षण के समय मेरा ध्यान इस अनुश्रुति पर गया था तब यह जानकारी एकत्रित हुई। आशा है सबको रुचिकर लगेगी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।